या देवी सर्वभूतेषु, मातृरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।

चिंतन

(सद्गुरुदेव परमहंस योगीराज श्री शक्तिपुत्र जी महाराज)

आपके गुरु ने तो धर्म का चयन किया है, आपके गुरु ने तो सत्य का चयन किया है और यदि तुम मेरे शिष्य हो या मेरे शिष्य बनना चाहते हो, तो तुम्हें भी धर्म एवं सत्य का चयन करना पड़ेगा। यदि तुम्हारे पास धर्म सुरक्षित है, तो तुम्हारे संस्कारों के फलस्वरूप जितनी सामर्थ्य तुम्हें प्राप्त होनी है, उस सामर्थ्य को यदि तुम पैर से ठोकर मारोगे, तो भी वह तुम्हारे पीछे-पीछे दौड़ेगी और यदि धन के पीछे भागोगे, तो तुम्हारा धर्म नष्ट होता चला जाएगा और जिस दिन तुम धर्म से पूरी तरह विरक्त होगए, उस दिन से तुम भिखारियों के समान जीवन जियोगे, असमर्थों के समान जीवन जियोगे। अब यह निर्णय तुम्हारे ऊपर है कि तुम्हें धर्म का चयन करना है या अधर्म का चयन करना है, सत्य की यात्रा में आगे बढ़ना है या असत्य की यात्रा में आगे बढ़ना है? निर्णय तुम्हें करना है कि धर्मरक्षा, राष्ट्ररक्षा और मानवता की सेवा के लिए तुम्हें अपना यह जीवन समर्पित करना है या अनीति-अन्याय-अधर्म के पथ पर चलना है?

सिद्धाश्रम पत्रिका

वर्ष-19, अंक-05, मई 2026

सम्पादक
पूजा शुक्ला

उप सम्पादक
अजय अवस्थी

कार्यकारी सम्पादक
आशीष शुक्ला

प्रबंध सम्पादक
सौरभ द्विवेदी
रजत मिश्रा

सहयोगी सम्पादक मण्डल
सन्तोष मिश्रा
बृजपाल सिंह चौहान

प्रचार-प्रसार प्रतिनिधि
प्रमोद तिवारी

रजि. क्रमांक
MPHIN/2008/37172

स्वामित्व एवं प्रकाशक
त्रिशक्ति प्रोडक्ट्स प्रा. लि.
पोस्ट- मऊ, तहसील- ब्यौहारी
ज़िला- शहडोल (म.प्र.) से मुद्रित

विवरणिका

क्र.	शीर्षक	पृष्ठ क्रमांक
1-	चिंतन	1
2-	विवरणिका	2
3-	सम्पादकीय	3
4-	ऋषिवाणीः योग-ध्यान-साधना शिविर	4
5-	पर्यावरणः हम अपने ही हाथों ...	13
6-	कल्पवृक्ष (पारिजात)	16
6-	सिद्धाश्रम धाम में अविराम श्री दुर्गाचालीसा ...	19
8-	हम सब एक ही चेतना के अंश हैं	22
9-	जनजागरण	24
10-	त्रिशक्ति साधना शिविर, सिद्धाश्रम	34
11-	प्रेरणाप्रद कथानक	36
12-	अध्यात्म गंगा/गीताज्ञान	37
13-	योग जगत्	38
14-	नशाविरोधी जनान्दोलन	40
15-	गुरुकृपा	43
16-	आत्मज्ञान	44
17-	आयुर्वेद	45
18-	मई/जून 2026 के महत्त्वपूर्ण व्रत एवं पर्व	47
19-	भावगीत	48

मूल्य-भारत में एक प्रति 30 रुपये एवं वार्षिक सदस्यता शुल्क 360 रुपये।
Email: subscription.sp@gmail.com

पूजा शुक्ला

संपादकीय

वर्तमान समय में मानसिक तनाव एक अदृश्य महामारी का रूप ले चुका है और यह महामारी आयुवर्ग का भेदभाव किए बिना बच्चों, युवाओं व बुजुर्गों तक को अपनी चपेट में लेता जा रहा है और इसका मुख्य कारण है सत्यधर्म, प्राणायाम, ध्यान-साधना आदि के प्रति अनास्था। इस मानसिक तनाव से बचने के लिए ऋषिवर सद्गुरुदेव श्री शक्तिपुत्र जी महाराज के चिन्तनों को शिरोधार्य करना पड़ेगा। ऋषिवर का चिन्तन है कि "तनावमुक्त जीवन के लिए आपको संस्कारित होना पड़ेगा, सत्यधर्म के पथ पर चलना पड़ेगा, नशे-मांसाहार से मुक्त चरित्रवान् जीवन अंगीकार करना होगा और बीती हुई बातों को भूलकर वर्तमान में जीना होगा। ध्यान रखें, आपका मन जहाँ भूतकाल की बातों को लेकर चिन्ता से ग्रसित रहता है, वहीं भविष्य की अनिश्चितताओं से भयभीत भी रहता है। इसलिए आप वर्तमान को संवारकर आगे की ओर बढ़ने का प्रयास करें।"

परम पूज्य गुरुवरश्री ने बताया है कि "तनाव से मुक्ति पाना है, तो किसी के साथ दुर्व्यवहार न करें, ईर्ष्या-द्वेष से दूर रहें और संतोषप्रद जीवन जिएं। नित्यप्रति प्राणायाम के लिए समय निकालें, क्योंकि श्वास और मस्तिष्क का गहरा सम्बन्ध है। गहरी श्वास लेने से मस्तिष्क की नसों को आराम मिलता है। प्राणायाम के बाद कुछ देर ध्यान में बैठें, इससे आपको अतीव शांति की अनूभूति होगी।"

ऋषिवर के चिन्तनों से हमें प्रेरणा मिलती है कि सन्तोष में ही आनन्द निहित है, इसलिए अपनी क्षमताओं को पहचानें और पुरुषार्थ करें। कहा भी गया है कि 'अपना पांव उतना ही पसारिए, जितनी बड़ी चादर हो।' इस सकारात्मक सोच से न केवल हम तनाव से बच सकते हैं, अपितु अपने जीवन को संतुलित और आनंदमयी बना सकते हैं।

जय माता की - जय गुरुवर की

ऋषिवाणी

- परमहंस योगीराज श्री शक्तिपुत्र जी महाराज

प्रवचन शृंखला क्रमांक - 221

शक्ति चेतना जनजागरण शिविर, सिद्धाश्रम, शहडोल, मध्यप्रदेश, दिनांक 28 सितम्बर 2017

योग-ध्यान-साधना शिविर

माता स्वरूपं माता स्वरूपं, देवी स्वरूपं देवी स्वरूपम्।
प्रकृति स्वरूपं प्रकृति स्वरूपं, प्रणम्यं प्रणम्यं प्रणम्यं प्रणम्यम्।।

बोलो माता आदिशक्ति जगत् जननी
जगदम्बे मात की जय।

नवरात्र के इन महत्त्वपूर्ण दिनों में इस पवित्र तपस्थली सिद्धाश्रम धाम पर यहाँ उपस्थित अपने समस्त चेतनाअंशों, शिष्यों, 'माँ' के भक्तों, श्रद्धालुओं एवं समस्त कार्यकर्ताओं को अपने हृदय में धारण करता हुआ, माता आदिशक्ति जगत् जननी जगदम्बा का पूर्ण आशीर्वाद प्राप्त करता हुआ अपना पूर्ण आशीर्वाद आप समस्त लोगों को समर्पित करता हूँ।

जीवन के ये बहुमूल्य क्षण, जिनका आकलन करना सहज नहीं है। ऐसे पावन समय में आप सभी भक्तजन इस पवित्र दिव्य धाम पर उपस्थित हैं, जब नवरात्र का पावन पर्व चल रहा है, उसमें भी अष्टमी तिथि और उससे अधिक शुभ गुरुवार का दिन है तथा इसी शुक्लपक्ष की अष्टमी को गोसेवा समर्पण दिवस के रूप में भी मनाया जाता है। इस तपस्थली में जहाँ पर दिव्य गोशाला स्थापित है, वहीं पर नज़दीक ही पूज्य दण्डी संन्यासी स्वामी जी की समाधि भी स्थापित है, जिनका आशीर्वाद आप सभी के साथ बना रहता है। मूलध्वज पर स्थापित माता आदिशक्ति जगत् जननी

चिंतन प्रदान करते हुए परम पूज्य सद्गुरुदेव श्री शक्तिपुत्र जी महाराज

जगदम्बा की वह पावन ध्वजा, जो सत्यधर्म का प्रतीक है और इस पवित्र स्थल पर जहाँ बीस वर्षों से लगातार 'माँ' का महत्त्वपूर्ण अनुष्ठान दुर्गाचालीसा का पाठ, सतत अनन्तकाल के लिए चल रहा है।

माता आदिशक्ति जगत् जननी जगदम्बा की कृपा से, उनके आशीर्वाद के फलस्वरूप मेरे स्वयं के द्वारा समाजकल्याण के लिए, धर्मरक्षा, राष्ट्ररक्षा और मानवता की सेवा के लिए, जो एकांत साधनाओं का क्रम चलता है, उन ऊर्जातरंगों के बीच आप यहाँ बैठे हैं। यदि हम केवल समय के महत्त्व को समझ लें और उस महत्त्व को हम आत्मसात करने में सफल होजाएं, तो हमारा जीवन सहजभाव से उस विचारधारा की ओर बढ़ता चला जाता है।

आप सभी लोग इस पवित्र दिव्यधाम पर नानाप्रकार की विचारधारा को लेकर उपस्थित हुए हैं। अधिकांश मेरे शिष्य हैं, स्वयंसेवी कार्यकर्ता हैं, जो समाज के बीच जन-जन तक पहुंचकर समाज को सत्यधर्म का पाठ पढ़ा रहे हैं, नशे-मांसाहार से मुक्त चरित्रवान् जीवन जीने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। तीन दिन के महत्त्वपूर्ण ये क्षण आपके पास हैं। इस पवित्र दिव्यधाम पर एक-एक पल महत्त्वपूर्ण होता है और माता आदिशक्ति जगत् जननी जगदम्बा की कृपा से आप लोगों के हाथ में यह सुनहरा सौभाग्य आया है, अतः इस सुनहरे सौभाग्य के पलों में माता आदिशक्ति जगत् जननी जगदम्बा का स्मरण चिंतन हरपल आपके मनमस्तिष्क पर बना रहना चाहिए। यदि आप लोग इस पवित्र दिव्यधाम की गरिमा को बनाकर रखेंगे, तो मैं आपको वचन देता हूँ कि यहाँ से कोई खाली हाथ वापस नहीं जाएगा।

मेरा एक-एक पल जनकल्याण के लिए समर्पित है और मैं कभी किसी का एक बूंद जल तक ऋण नहीं रखता। बचपन से युवावस्था में आने के साथ ही माता आदिशक्ति जगत् जननी की एक महत्त्वपूर्ण साधना को पूर्ण करने के

बाद मेरे जीवन का सबसे पहला यही संकल्प था कि अपने स्वयं के जीवन पर केवल माता आदिशक्ति जगत् जननी जगदम्बा का ऋण रखूंगा, न अपने परिवार का ऋण रखूंगा और न अपने समाज का ऋण रखूंगा। एक-एक पल का मेरा जीवन समाज के बीच में ही व्यतीत हुआ है। मेरा जन्म कहाँ हुआ है, मेरी आध्यात्मिक यात्रा कहाँ से प्रारम्भ हुई और कहाँ तक चल रही है? सबकुछ आईने के समान समाज के बीच है।

आप लोग यहाँ अनेक नये भक्तों को लिवाकर लाए होंगे, तो उन्हें इस पवित्र दिव्यधाम से अधिक से अधिक लाभ दिलाने का प्रयास करें। आप यहाँ पर खाने और सोने के लिए नहीं आए, घूमने के लिए नहीं आए, बल्कि आप यहाँ पर आस्था और विश्वास के साथ माता आदिशक्ति जगत् जननी जगदम्बा की कृपा को प्राप्त करने के लिए आए हैं, गुरु का सान्निध्य प्राप्त करने के लिए आए हैं, गुरु का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए आए हैं, इस पवित्र दिव्यधाम का दर्शन करने के लिए आए हैं। अनेक ऐसे शिष्य हैं, कार्यकर्ता हैं, जो यहाँ केवल एक लक्ष्य लेकर आते हैं कि इस पवित्र दिव्यधाम पर प्रतिवर्ष शारदीय नवरात्र की अष्टमी, नवमी और विजयदशमी की तिथियों पर जो शक्ति चेतना जनजागरण शिविर आयोजित किया जाता है, उसमें हमें गुरुवर के दर्शन प्राप्त हों, हमें तीन दिव्य महाआरतियों का लाभ प्राप्त हो। अनेक लोग अपनी कुछ समस्याओं को लेकर आए हैं, अनेक लोग अपने आपको नशे-मांसाहार से मुक्त करके चरित्रवान् जीवन अपनाने के लिए आए हैं और अनेक भक्त अपनी-अपनी कामनाओं को लेकर उपस्थित हुए हैं।

सत्य को सत्य के रूप में समझो, सत्य को सत्य के रूप में जानो और यदि सत्य को सत्य के रूप में जानने में सफल होगए, सत्य से आप रिश्ता जोड़ने में सफल होगए, तो चेतनातरंगें सहजभाव से आपको प्राप्त होजाती हैं। इसीलिए मेरे द्वारा हर मंच से कहा जाता है कि भिखारी बन करके नहीं, पात्र बनकर आशीर्वाद प्राप्त करो। पात्र बनकर जो आशीर्वाद प्राप्त करोगे, वह सदा तुम्हारे पास रहेगा, तुम्हारी पूंजी बनकर रहेगा और तुम्हारा सिर सदैव सम्मान और चैतन्यता के साथ तना रहेगा, तुम्हें कहीं सिर झुकाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी, क्योंकि तुम उस पात्रता के साथ आगे बढ़ रहे हो और जब पात्र एक साथ मिलते हैं, तो उनमें जो प्रेमसम्बंध होता है, वह स्थायी होता है। हर एक सम्बन्धों की अलग-अलग स्थितियाँ होती हैं। गुरु और शिष्य का सम्बन्ध, भक्त और भगवती का सम्बन्ध, ये जो भी सम्बन्ध हैं, ये पात्रता पर, कर्म की प्रधानता पर जुड़े हुए हैं।

बड़े-बड़े ग्रन्थ गीता, रामायण को पढ़ने से आपका कल्याण नहीं होगा, अपितु उनमें निहित सारतत्त्व को आत्मसात कर लो, आपका कल्याण हो जायेगा। उस भगवती से रिश्ता जोड़ने के लिए तुम्हें किस प्रकार का जीवन जीना है? लाभ ही तो प्राप्त करना चाहते हो, सान्निध्य ही तो प्राप्त करना चाहते हो, आशीर्वाद ही तो प्राप्त करना चाहते हो, तो प्राप्त करने का जो सही मार्ग है, उस मार्ग पर चलो। आज तक समाज का पतन केवल इसलिए हुआ है, क्योंकि वह सही पथ पर नहीं बढ़ पाया।

हम जिस इष्ट के आराधक हैं, हमें यदि उनसे आशीर्वाद प्राप्त करना है, तो हमें किस प्रकार की भक्ति करनी चाहिए? किस प्रकार की भावना रखनी चाहिए? जो जैसी शक्ति होती है, हमें उसके अनुरूप ही प्रार्थना करनी चाहिए, उसके अनुरूप ही भावना रखनी चाहिए, तभी हमारा कल्याण होगा, तभी हमें लाभ प्राप्त होगा। यदि हम 'माँ' का आशीर्वाद प्राप्त करना चाहते हैं, तो हमारा स्वभाव सहज-सरल होना चाहिए। यदि 'माँ' से रिश्ता जोड़ना चाहते हैं, अटूट सम्बन्ध बनाना चाहते हैं, तो पुत्र जैसे भाव, पुत्र जैसी आस्था होनी चाहिए। यदि गुरु से रिश्ता जोड़ना चाहते हैं, अटूट सम्बन्ध बनाना चाहते हैं, तो गुरु

के स्वभाव के अनुरूप अपने स्वभाव को ढालना ही पड़ेगा और दूसरा कोई मार्ग नहीं है। 'माँ' का सहज स्वभाव क्या है? माँ ममतामई हैं, दयामई हैं, करुणामई हैं, वात्सल्यमई हैं और यदि हम उनसे जुड़ना चाहते हैं, तो उनके गुणों को हमें अपने अंदर भी समाहित करना पड़ेगा। यही तो हमारे जुड़ने की प्रक्रिया है कि जिस शक्ति से जुड़ें, उस शक्ति के स्वभाव को हम अपने अंदर ढालने का प्रयास करें।

आप अभी तक कैसा जीवन जीते थे, सब भूल जाओ और तीन दिनों तक इस पवित्र दिव्यस्थली पर, मेरे सान्निध्य में रह करके अपने आपको निर्मल बनाने का कार्य करलो, अपने आपको सहज बनाने का कार्य करलो और राग, द्वेष, ईर्ष्या से ऊपर उठ जाओ। केवल तीन दिन मांग रहा हूँ, तीन दिन मुझे दे दो, तुम्हारे जीवन में एक अलग ही चैतन्यता आ जाएगी। जब तुम तीन दिन बाद आश्रम से जाओगे, तो तुम्हारा तेज, तुम्हारा शौर्य, तुम्हारे अंदर का पराक्रम, तुम्हारे अंदर की कोशिकाएं तुम्हें सत्यपथ पर बढ़ाने में सहायक होंगी। यदि समाज का कल्याण करना है, तो हमें साधक बनना ही पड़ेगा, हमें भक्त बनना ही पड़ेगा और यदि हम अपने अंदर की कोशिकाओं को मारते चले जायेंगे, उन्हें तमोगुणी बनाते चले जायेंगे, रजोगुणी बनाते चले जायेंगे, तो हमारा स्वभाव भटकता चला जायेगा। हमारे अंदर के जो मूल पात्र हैं, हमारा जो मूल स्वभाव है, वे कोशिकाएं हमें उससे बहुत दूर ले जाएंगी और फिर हमारी मांग पर, हमारी प्रार्थना पर भी हमें उन तरंगों का फल नहीं प्राप्त होगा।

आप सभी जानते हैं कि हमारी आत्मा अजर-अमर-अविनाशी है और इसमें निखिल ब्रह्माण्ड समाहित है। वह अनमोल धरोहर, वह अलौकिक शक्ति आत्मा के रूप में हमारे अंतःकरण में मौजूद है और यदि हम परमसत्ता से सम्बन्ध बनाना चाहते हैं, उनकी कृपा को पाना चाहते हैं, तो माता आदिशक्ति जगत् जननी जगदम्बा ने आत्मा के रूप में जो हमें दे रखा है, उस पर से हमें कुविचारों, कुसंस्कारों का आवरण हटाना पड़ेगा। जिस दिन से उन आवरणों को

परम पूज्य सद्गुरुदेव श्री शक्तिपुत्र जी महाराज के चिंतन श्रवण करते हुए भक्तगण

हटाने की सोच पैदा कर लोगे और हटाना प्रारम्भ कर दोगे, तो चेतनातरंगें सहजभाव से प्राप्त होती चली जायेंगी। 'माँ' ने तो सबकुछ दे रखा है, चाहे मेरा तन हो, चाहे आपका तन हो, सभी के अंदर वह दिव्यता भरी हुई है, सभी के अंदर वह चैतन्यता भरी हुई है, उसको सही तरीके से समझने का प्रयास करो, सही मार्ग पर चलने का प्रयास करो, तुम्हारी समस्याओं का समाधान सहजभाव से होता चला जाएगा और यदि तुम्हारे अन्दर पात्रता नहीं होगी, तो चाहे मैं देना चाहूं, चाहे कोई और देना चाहे, लेकिन वह आपके लिए फलीभूत नहीं होगा।

सबसे पहले अपने स्वभाव में परिवर्तन लाने का प्रयास करो, 'माँ' के सच्चे भक्त बनना प्रारम्भ करो। सच्चे भक्त बनकर तो देखो। आप सभी कहते रहते हो कि हम तो 'माँ' को बहुत मानते हैं जी, हम तो 'माँ' के बहुत बड़े भक्त हैं जी। मान लेने से या स्वयं को भक्त बोल देने से आपको कुछ नहीं प्राप्त होगा। केवल एक पक्ष की दौड़ है, जिससे आपकी कामनाओं की आंशिक पूर्ति होजाए, आपको आंशिक लाभ प्राप्त होजाए! ये सब तो हो सकता है, चूंकि 'माँ' के प्रति एक छोटी सी सोच बनाने का भी आशीर्वाद प्राप्त होता है, मगर वह पूर्ण आशीर्वाद में कभी नहीं परिवर्तित हो सकता। एक समस्या का समाधान होगा, तो दो और समस्याएं आपके सामने खड़ी हो जाएंगी। पूर्ण आशीर्वाद प्राप्त करना है, तो स्वयं को साधक बनाओ, 'माँ' के भक्त बनो। 'माँ' को जानना शुरू करो कि वे कैसी हैं, उनका स्वभाव कैसा है?

भक्ति में केवल स्तुति प्रार्थना ही महत्त्वपूर्ण नहीं होती, बल्कि अपने स्वभाव को 'माँ' के स्वभाव के अनुरूप बदल लो कि हम माँ से जुड़ना चाहते हैं, माँ के सेवक बनना चाहते हैं, लेकिन सेवक बनने की पात्रता तो होनी चाहिए। पात्रता तभी होगी, जब हम उनके अनुसार पात्र बनेंगे। कोई पुरुषार्थी गुरु हो और यदि आप उससे जुड़ना चाहेंगे, तो वह उसी शिष्य को अधिक प्रिय मानेगा, जो पुरुषार्थी शिष्य होगा। कोई तपस्वी गुरु होगा, तो उसी को ज़्यादा महत्त्व देगा, जो तपस्वी शिष्य होगा, जो परोपकारी शिष्य होगा। कोई नशे-मांसाहार से मुक्त चरित्रवान् जीवन जीने वाला गुरु होगा, तो उसी शिष्य को सबसे ज़्यादा महत्त्व देगा, जो नशे-मांसाहार से मुक्त चरित्रवान् जीवन जीता होगा। हम जिससे जुड़ना चाहें, हमारा उसी के जैसा स्वभाव होना चाहिए। किसी को मीठा पसंद हो और तुम उसे करेले का जूस पिलाओ, तो क्या वह प्रसन्न होगा? कभी नहीं। बहुत सहज मार्ग है और केवल एक बात सोचकर रखो कि माँ मेरी हैं एवं मैं माँ का हूँ। यह भाव सबसे पहले अपने अंदर बना लो कि माँ मुझसे दूर नहीं हैं, माँ के साथ मेरा अटूट सम्बन्ध है।

'माँ' ने कुण्डलिनी का मार्ग दे रखा है, चेतना का मार्ग दे रखा है कि उसको लोग जितना जगाते चले जाएंगे, जितना पात्र बनते चले जाएंगे, 'माँ' की तरंगों को और अधिक प्राप्त करते चले जायेंगे। समाज के पतन का मूल कारण है कि समाज हज़ारों-हज़ार वर्षों से केवल अपनी कामनाओं की पूर्ति में भटकता चला गया और साधकप्रवृत्ति से दूर हटता चला गया। हम उन ऋषि-मुनियों को भूल गए, जो हज़ारों वर्षों तक तपस्या करते थे, त्रिकालदर्शी थे, नए स्वर्ग की रचना करने की सामर्थ्य रखते थे, अपने शरीर तक का दान कर देने वाले थे, सूर्य की गति को रोक देने वाले थे, समुद्र को अंजुलि में भरकर पी लेने वाले थे। उन ऋषियों की सामर्थ्य की कल्पना करो कि उनमें कितनी अलौकिक सामर्थ्य रही होगी। उन नारियों में, जो देवाधिदेवों को भी पालने में झूलने के लिए बच्चे बनाकर डाल दें, जरा कल्पना करो कि उनमें कितनी आत्मशक्ति रही होगी, कितना अलौकिक बल रहा होगा, कितना चरित्रवानों का जीवन रहा होगा? हम उन्हीं के तो वंशज हैं। क्या हम उन ऋषि-मुनियों का स्मरण करते हैं?

हमें नवरात्र के क्षण यह विचार करने के लिए प्राप्त होते हैं कि हमारे आदर्श कौन हैं? क्या आप चौबीस घण्टे में एक बार भी सोचते हैं कि मैं किसी आदर्श पुरुष के बारे

में थोड़ी देर बैठकर सोचूँ, किसी आदर्श पुरुष की मैं पुस्तकें पढ़ूं, किसी तपस्वी के जीवन के बारे में समझूं, जानूं? आज समाज का पतन इसीलिए हो रहा है कि फिल्मी स्टार आज आदर्श बने हुए हैं, भ्रष्ट-बेईमान लोग आदर्श बने हुए है कि वे कैसे भौतिक सुखों को प्राप्त कर रहे हैं और उन्हीं सुखों को हमें प्राप्त करना है! तुम्हें क्या चाहिए? तुम्हें आनन्द चाहिए या वे सुख चाहिए, जो तुम्हें पतन के मार्ग पर ले जायेंगे। आनन्द स्थाई होता है, आनन्द तुम्हें तृप्ति देता है, आनन्द तुम्हें संस्कारवान बनाता है और आनन्द के पीछे सौभाग्य दौड़ता हुआ आता है। तुम्हें वह अलौकिक आनन्द चाहिए या वह क्षणिक सुख चाहिए कि कल तुम्हें उसका परिणाम भोगना पड़े।

अधिकांश लोगों की सिर्फ़ एक भावना है कि मैं धनवान बन जाऊं, मैं निरोगी काया प्राप्त कर लूं और सारी सुंदरता मुझे प्राप्त होजाए। बाहर की सुंदरता इतनी प्रिय लगती है, लेकिन क्या कभी अपने अंदर की सुंदरता और तृप्ति को खोजने का आपने प्रयास किया? केवल मंदिरों में जाकर मत्था टेकते रहना, केवल अपनी कामनाओं के लिए निवेदन करते रहना और उसके बाद भी सतत पतन की ओर बढ़ते चले जाना, क्या इसी पथ पर चलना चाहते हो या एक बार सत्य की आवाज़ को भी सुनना चाहते हो? सत्य के पथ पर तुम बढ़ रहे हो, मगर गति बहुत धीमी है। तुम सत्य की आवाज़ को सुन रहे हो, मगर तुम्हारे अंतःकरण में वह आवाज़ अभी बैठ नहीं रही है। तुम ग्रहण करते हो, मगर उसको स्थाई स्थान नहीं दे पाते हो।

इस कलिकाल के भयावह वातावरण में यदि ज़रा सा भी यह महसूस कर रहे हो कि वास्तव में अनीति-अन्याय-अधर्म का साम्राज्य स्थापित है, तो उस अनीति-अन्याय-अधर्म के साम्राज्य को समाप्त करने के लिए आपको सबसे पहले अपने अंदर के अनीति-अन्याय-अधर्म के साम्राज्य को समाप्त करना पड़ेगा। यदि तुम अपने अंदर स्थापित अनीति-अन्याय-अधर्म के साम्राज्य को समाप्त करने में सफल होगए, तो बाहर के अनीति-अन्याय-अधर्म का साम्राज्य सहजभाव से समाप्त होता चला जाएगा।

समाज में अनेक बार आप लोगों ने उदाहरण देखे होंगे कि एक कोई समाजसेवक जाग्रत् हुआ, एक कोई ऋषि समाज के बीच आया, एक कोई तपस्वी समाज के बीच आया, तो उसने करोड़ों-करोड़ लोगों का जीवन बदल दिया। कौन सी ऐसी शक्ति कार्य करती है? सोचो, विचार करो कि तुम्हारे आदर्श कौन होने चाहिए? विचारों से जीवन में बहुत बड़ा परिवर्तन आता है। 'माँ' के भक्त बनना चाहते हो, यही तो तुम्हारे जीवन का मूल सार है। इसके अलावा हमारा और कोई आश्रय नहीं है। इस कलिकाल के भयावह वातावरण में माता भगवती आदिशक्ति जगत् जननी जगदम्बा के चरण ही हमें आनन्द प्रदान कर सकते हैं, हमारी समस्त व्याधियों, हमारी समस्त समस्याओं का समाधान कर सकते हैं। इस कलिकाल से भयावह वातावरण और क्या होगा? मगर उसके लिए हमें क्या करना चाहिए? आपको यही पाठ इस दिव्यधाम से सिखाया जाता है।

आपका गुरु स्वयं तपस्वियों का जीवन जीता है और इसलिए कहता हूँ कि मेरे शिष्य देखें, समझें और वैसा जीवन कुछ तो जीकर देखें। यहाँ आते हो, तुम्हें ऊर्जा प्राप्त होती है और तुम स्वयं कहते हो कि गुरुदेव जी आश्रम आते ही मेरी बैटरी चार्ज होजाती है, मगर उसको स्थाई नहीं रख पाते हो। मैं चाहता हूँ कि तुम इस तरह अपनी बैटरियों को चार्ज करो, जिससे दूसरों की भी बैटरियाँ चार्ज कर सको। यह वह पवित्र दिव्य धाम है, जहाँ पर अनेक लोग आते हैं और अनेक प्रकार की समस्याओं का समाधान प्राप्त करके जाते हैं, मगर मैंने कहा कि उन समस्याओं के समाधान से ज़्यादा मेरी जिस समस्या पर सबसे अधिक निगाह होती है कि आपका जो पतन हो रहा है, उसे मैं कैसे रोकूं? उसी को

रोकने के लिए आपको नशे-मांसाहार से मुक्त चरित्रवान् जीवन जीने की प्रेरणा दी जाती है, साधकों का जीवन जीने का मार्ग बताया जाता है। जब आप नशे-मांसाहार से मुक्त चरित्रवान् जीवन जियोगे, तभी आपके अंदर पात्रता आएगी, क्योंकि जब तक हम अपने जीवन में परिवर्तन नहीं करेंगे, तब तक हमें परमसत्ता का आशीर्वाद प्राप्त नहीं हो सकता।

नवरात्र के पर्वों पर हम नानाप्रकार की साधनाएं करते हैं, अनुष्ठान करते हैं। करिए, अच्छी बात है, जितना कर सकते हैं, उतना करिए, मगर उससे ज़्यादा जब तक आप अपने शरीर का शोधन नहीं करेंगे, अपने अवगुणों का त्याग नहीं करेंगे, तब तक चाहे हज़ारों साल साधनाएं करते रहो, तुम्हारे हाथ खाली के खाली रहेंगे। एक बार मेरे विचारों पर अमल करो कि साधना भी करो और साधक भी बनो। दोनों पक्ष एकसाथ लेकर चलना पड़ेगा। यदि साधक बनने में सफल होगए, तो परमसत्ता से दूर नहीं हो।

ऐसा कभी मत सोचना कि जब पूर्णत्त्व को प्राप्त कर लोगे, तभी आशीर्वाद प्राप्त होगा। अरे यह सत्य का वह मार्ग है कि ज़रा सा अच्छा सोचो, तो उसके परिणाम मिलने प्रारम्भ होजाते हैं। एक मंत्र का जाप करो, एक सत्कर्म करो, एक परोपकार का कार्य करो, तो उसका फल आपके साथ जुड़ना प्रारम्भ होजाता है। यही तो ममतामई आदिशक्ति जगत् जननी जगदम्बा की कृपा है। हम 'माँ' के अंश हैं, इससे प्रगाढ़ रिश्ता भला और क्या होगा? हर माँ अपने पुत्र-पुत्रियों से चाहती क्या है और हम उन्हें दे क्या रहे हैं? जिस जीवन को देवाधिदेव भी तरसते हैं, वह मनुष्य जीवन उन्होंने हमें दिया, अनेक योनियों से ऊपर श्रेष्ठ जीवन दिया। तो क्या हम श्रेष्ठ कर्म कर रहे हैं? नित्यप्रति इस पर विचार करो। श्रेष्ठ कर्म करने प्रारम्भ कर दो, उस पथ पर बढ़ना प्रारम्भ कर दो, 'माँ' की कृपा के पात्र बन जाओगे। उस तरफ सोचते तो हो, मगर वह क्षणिक सोच होती है, स्थायित्व नहीं ले पाते

परम पूज्य सद्गुरुदेव श्री शक्तिपुत्र जी महाराज के चिंतन श्रवण करते हुए भक्तगण

और फिर भौतिक झंझावातों में उलझ जाते हो।

माता आदिशक्ति जगत् जननी जगदम्बा, जो देवाधिदेवों ब्रह्मा, विष्णु, महेश की भी जननी हैं। आज समाज इस पर भी भ्रांति बनाकर बैठा है और बड़े-बड़े साधु-संत-संन्यासी, कथावाचक भटक रहे हैं! इस सत्य के रहस्य को आज तक नहीं जान सके, क्योंकि स्वयं उनके अंतःकरण से आत्मा तक उस सत्य की तरंगें कभी पहुंची ही नहीं, उन्होंने आत्मतत्त्व को जाना ही नहीं। जब 'माँ' को सही रूप से जानोगे नहीं, तो उनकी कृपा क्या प्राप्त करोगे?

कोई कहता है कि ब्रह्मा, विष्णु, महेश से माता दुर्गा जी की उत्पत्ति हुई! धिक्कार है ऐसी सोच पर! किस जगह और कहाँ पर यह लिखा हुआ है? लोग कह देते हैं कि दुर्गा सप्तशती में लिखा हुआ है। मैं उन पण्डितों से पूछना चाहता हूँ, जो कई बार दुर्गा सप्तशती के पाठ करा चुके हैं। क्या तुमने दुर्गा सप्तशती को ठीक से पढ़ा है? यदि प्रथम अध्याय भी सही तरीके से पढ़ लिया होता, ब्रह्मा जी के द्वारा की गई प्रथम स्तुति को यदि पढ़ा होता, तो ये भ्रांतियाँ समाप्त होजातीं। वहाँ पर वे क्या-क्या कहते हैं? माता जगदम्बे को जननी कहते हैं, स्वयं स्तुति करते हुए कहते हैं कि आपने मेरा शरीर धारण कराया है, विष्णु जी का शरीर धारण कराया है, शिव जी का शरीर धारण कराया है, आप जननी हैं, आप सर्वस्व हैं, इस जगत् में जो कुछ भी है, वह आप हैं, आपसे यह जगत् संचालित है। ब्रह्मा, विष्णु, महेश स्वयं उनकी माया के वशीभूत हैं। वे स्वयं स्तुति करते हैं कि विष्णु भगवान् को अपनी माया से वशीभूत कर दो, जिससे इनके अंदर मधु-कैटभ का वध करने का संकल्प जाग्रत् होजाए। यदि माता जगदम्बा ब्रह्मा, विष्णु, महेश का अंश हैं, तो उनको कैसे वशीभूत कर सकती हैं? वशीभूत तो वही कर सकता है, जो उनके ऊपर खड़ा हुआ है। इसलिए ब्रह्मा जी की स्तुति को ठीक से पढ़ो और समझो।

दुर्गा सप्तशती के प्रथम अध्याय में ही बहुत ज्ञान प्राप्त हो जाएगा। अलग-अलग वृत्तांतों में अलग-अलग चिंतन दिए गए हैं। यदि नरसिंह भगवान् खम्भे को फाड़कर निकल आए, तो क्या खंभे के पुत्र कहलायेंगे? यदि ब्रह्मा, विष्णु, महेश से उत्पत्ति मानते हो, तो और आगे बढ़ जाओ। जब शुम्भ-निशुम्भ से प्रताड़ित होते हैं, तो पार्वती जी के शरीर से उनकी उत्पत्ति बताई जाती है। सत्य यह है कि 'माँ' की उत्पत्ति तो मेरे शरीर से हो सकती है, आपके शरीर से हो सकती है, किसी के शरीर से प्रकट होकर वे खड़ी हो सकती हैं, चूंकि वे कण-कण में व्याप्त हैं और जब उनकी जहाँ स्तुति की गई, उन क्षणों पर उन्हीं के बीच से उपस्थित होकर 'माँ' ने अपना साकार स्वरूप स्थापित किया। उन्हें कौन क्या देगा? जो उनके अस्त्र-शस्त्र थे, वे अस्त्र-शस्त्र निकलकर उनके हाथों में आ गए। वहाँ पर वर्णन यही है। दुर्गा सप्तशती के अनेक श्लोकों के बारे में संक्षेप में लिखा है कि इनके रहस्यों को उद्घाटित नहीं किया जा सकता, चूंकि उचित नहीं है।

दुर्गा सप्तशती एक ऐसा ग्रंथ है, जिसके श्लोकों की व्याख्या करना प्रारम्भ कर दिया जाए, तो दुनिया में कोई वेद-पुराण, शास्त्र-उपनिषद एक अंशमात्र कहलायेंगे। माता भगवती अनंत लोकों की जननी हैं, जिन्होंने अनेक ब्रह्मा, विष्णु, महेश की उत्पत्ति की। हमारे अनेक सौरमण्डल हैं। हम ऋषियों की वाणी को भूल जाते हैं कि एक सौरमण्डल नहीं है, अनेक सौरमण्डल हैं। एक ब्रह्मा, विष्णु, महेश नहीं, बल्कि अनेक ब्रह्मा, विष्णु, महेश हैं, एक राम नहीं, अनेक राम हैं, एक कृष्ण नहीं, अनेक कृष्ण हैं। इन सबकी उत्पत्ति किससे हुई? वही ब्रह्मा, विष्णु, महेश उन्हें जगत् जननी कहते हैं, अम्बा कहते हैं, देवी कहते हैं, अपना आराध्य मानते हैं, उनके चरणों पर नतमस्तक होते हैं। ब्रह्मा जी उनकी स्तुति, प्रार्थना करते हैं और अपनी समस्याओं के समाधान में उनका आवाहन करते हैं। किन्तु, अब आज का समाज नानाप्रकार की कहानियाँ सुनने में लग जाता

है। वह माता जगत् जननी हैं, अजन्मा हैं, अविनाशी हैं, वहीं ब्रह्मा, विष्णु, महेश तो माया के वशीभूत हैं। अरे, एक तपस्वी नारी उनको बालक बनाकर पालने पर सोने के लिए बाध्य कर देती है, इससे बड़ी बात और क्या होगी?

इस भूतल पर ही नहीं, बल्कि पूरी सृष्टि के अंदर, आज तक न कोई ऐसा तपस्वी पैदा हुआ है, न कोई ऐसा तपस्वी पैदा होगा, जो माता भगवती आदिशक्ति जगत् जननी जगदम्बा की शक्ति को अंशमात्र भी झुकाने की क्षमता रखता हो। उन्हें तो प्रेम से पाया जा सकता है, उन्हें तो भक्ति से पाया जा सकता है। 'माँ' को गहराई से समझो और जानो। 'माँ' के अनेक महत्त्वपूर्ण ऐसे रहस्य हैं, लेकिन मेरा जीवन कुछ संकल्पित है, चूंकि मेरे स्वयं के चिंतनों में है कि जब तक मैं यज्ञस्थल का निर्माण करके यज्ञों को प्रारम्भ नहीं कर दूंगा, तब तक कई रहस्यों को उजागर नहीं करूंगा और यज्ञों की पूर्णता के बाद एक 'माँ'रूपी ग्रंथ समाज को प्रदान किया जाएगा, जिस ग्रंथ में समस्त रहस्यों को प्रमाणित करके दिया जाएगा।

मेरी जो आवाज़ होती है, मेरी जो चुनौतियाँ होती हैं, केवल सुनने भर के लिए नहीं होती हैं। अभी तो मैं समाज को उकसा रहा हूँ कि तुम देखो-जानो और पात्रता लेकर आगे बढ़ो, या तो सुधरो या तो सुधारे जाओगे। मैं चाहता हूँ कि वे पात्रता लेकर आएं कि कोई-न-कोई ऐसी स्थिति आए कि वास्तव में सत्य का आकलन करने के लिए एक जगह ऐसे कुछ लोग बैठें, विचार करें कि सत्य क्या है और असत्य क्या है? आज धर्मग्रंथों में लोग भटक रहे हैं, बड़े-बड़े वेदज्ञानी वेदों का सार नहीं निकाल पाते और जो 5-7 मूल आचार्य हैं, उनमें से कोई कुछ कह रहा है, तो कोई कुछ कह रहा है! वे ज्ञानी तो हैं, मगर आत्मज्ञानी नहीं! यदि आत्मज्ञानी होते, तो हर चीज़ के मूल रहस्य को निकालकर रख देते। मूल रहस्य को आत्मज्ञानी ही रख सकता है। ज्ञानी श्रेष्ठ नहीं होता, आत्मज्ञानी श्रेष्ठ होता है। वेदों, पुराणों, शास्त्रों की रचना भी हमारे आत्मज्ञानियों ने ही की है। केवल उनको पढ़ लेना, चिंतन दे देना ही पूर्ण नहीं होता।

नवरात्र का पर्व है, पूरे देश में 'माँ'मय वातावरण है तथा इस वातावरण में आप लोग भी इस दिव्यधाम में 'माँ' का आशीर्वाद प्राप्त करने आए हो। इसलिए भक्तिभाव से उस जगत् जननी की आराधना करो, जो हमारी आत्मा की जननी हैं। हमारा यह शरीर जो पंचतत्त्वों से निर्मित है, यह तो नाशवान है, हमें कुछ समय के लिए मिला है और कुछ समय के बाद नष्ट हो जायेगा। हमने इस तरह के अनेक जीवन जिए हैं और फिर वे शरीर नष्ट हुए हैं, मगर तब भी हम थे, आज भी हम हैं और कल भी हम रहेंगे और रहने वाला कौन है? वह है हमारी आत्मा और हमारी आत्मा का रिश्ता उस जगत् जननी से जुड़ा हुआ है। अब हमें निर्णय लेना है कि एक सुनहरा सौभाग्य इस काल में फिर आपके पास आया है, एक सुनहरा अवसर फिर आपके द्वार आया है कि आप चाहो तो इस मुकाम से यदि परिवर्तन की दिशा में बढ़ना प्रारम्भ कर दो, सत्य की दिशा में बढ़ना प्रारम्भ कर दो, तो उस जगत् जननी से नज़दीकता बढ़ती चली जाएगी और तुम पूर्णता की ओर बढ़ते चले जाओगे।

क्रमशः ...

संकलन- बहन पूजा शुक्ला

विशेष परम पूज्य सद्गुरुदेव योगीराज श्री शक्तिपुत्र जी महाराज के विशिष्ट चेतनात्मक चिन्तन का प्रसारण संतवाणी टीवी चैनल पर प्रतिदिन प्रातः 08:00 से 08:30 बजे तक किया जाता है।

पर्यावरण

हम अपने ही हाथों अपना अस्तित्व नष्ट कर रहे हैं?

प्रकृति और मानव का एक-दूसरे के साथ युगों पुराना सम्बन्ध है, लेकिन इस कलियुग में कथित विकास की अंधी दौड़ में दोनों के सम्बन्ध टूट रहे हैं। कल-कारखानों, बड़े-बड़े वाहनों से निकलता ज़हरीला धुआँ, जहाँ हमारी प्राणवायु (ऑक्सीजन) को प्रदूषित कर रहा है, वहीं कल-कारखानों से निकलने वाले ज़हरीले पानी को जीवनदायिनी नदियों में प्रवाहित करके जल को भी प्रदूषित किया जा रहा है, जिससे जीव-जंतु तो मौत के शिकार हो ही रहे हैं, कृषिकार्य भी बुरी तरह प्रभावित हुआ है।

वर्तमान में हम एक ऐसी विषम परिस्थिति में पहुंच चुके हैं कि पर्यावरण असंतुलन और बढ़ता प्रदूषण मानवजीवन ही नहीं, सभी जीव-जन्तुओं के लिए सबसे बड़ा ख़तरा बन चुका है। प्रदूषित हवा, नदियों में गंदगी, खनिज सम्पदा का बेतहासा उत्खनन, मिट्टी का क्षरण, वृक्षों की अंधाधुंध कटाई और सबसे बड़ा कारण देश में गहराता भ्रष्टाचार, ये सभी तथ्य इस बात के प्रमाण हैं कि हमने प्रकृति को नष्ट करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। जबकि, परमसत्ता ने मनुष्य की रचना इसलिए कि वह उसके द्वारा बनाई रचना को और संवारेगा, सुन्दरतम रूप प्रदान करेगा, लेकिन मानव है कि स्वार्थ के वशीभूत विध्वंसात्मक कार्यों में लिप्त है। वह यह भूल चुका है कि इससे उसका ही अस्तित्त्व नष्ट होगा।

ऋषिवर सद्गुरुदेव श्री शक्तिपुत्र जी महाराज का चिंतन है कि ''स्वार्थ से ग्रसित मनुष्य पंचतत्त्वों से ही खिलवाड़ करने लगा है, जिनसे इस दुनिया का निर्माण हुआ है, हमारे इस शरीर की रचना हुई है। यही कारण है कि पर्यावरण असंतुलन और बढ़ते प्रदूषण से मनुष्य की जिन्दगी, जो 100 वर्ष से अधिक होनी चाहिए, 60-70 साल तक की उम्र में सिमटकर रह गई है, जबकि हवा में बढ़ते प्रदूषण व प्रदूषित पेयजल से उत्पन्न संक्रामक बीमारियाँ तो बचपन, युवा व बुढ़ापे का भेद ही नहीं करतीं और परिणामस्वरूप प्रतिवर्ष असमय ही लाखों लोगों की मौत हो रही है।

हमारे सनातनधर्म में वृक्षों, पहाड़, नदी, तालाबों की पूजा

का विधान किया गया है, जिससे हमें स्वस्थ व दीर्घायु जीवन प्राप्त हो सके और जिनकी हम पूजा करते हैं, जिनके कारण हमारा जीवन सुरक्षित है, आख़िर उनके अस्तित्त्व को हम कैसे नष्ट कर सकते हैं? ध्यान रखें, जिनको हम बना नहीं सकते, उन्हें नष्ट करने का हमें कोई अधिकार नहीं है और यदि उन्हें नष्ट करेंगे, तो हम भी नष्ट हो जाएंगे।''

यदि प्राणवायु चाहते हो, अपना जीवन बचाना चाहते हो, स्वस्थ रहना चाहते हो, तो अधिक से अधिक वृक्षारोपण करना होगा। सद्गुरुदेव श्री शक्तिपुत्र जी महाराज के सान्निध्य में पूजनीया शक्तिमयी माता जी, शक्तिस्वरूपा बहनों व सिद्धाश्रम चेतनाओं तथा सिद्धाश्रमवासियों के द्वारा धर्मधुरी के रूप में स्थापित पंचज्योति शक्तितीर्थ सिद्धाश्रम में सनातन पर्वों पर वृक्षारोपण किया जाता है। इससे समाज को प्रेरणा लेनी चाहिए।

गहराता ही जा रहा है प्रदूषण का संकट

देश की राजधानी दिल्ली व अन्य महानगरों सहित अब तो मध्यम और छोटे नगर भी वायु प्रदूषण की चपेट में हैं। अंतरराष्ट्रीय मानकों से 18 से 20 गुना अधिक वायु प्रदूषण बढ़ चुका है। एक रिपोर्ट के अनुसार, दिल्ली व अन्य महानगरों में रहने वाला हर व्यक्ति प्रदूषित हवा के कारण किसी-न-किसी बीमारी से ग्रसित है और यदि यह कहें तो अतिशयोक्ति न होगी कि उनकी वास्तविक उम्र का चौथाई हिस्सा कम हो चुका है। प्रदूषित हवा और प्रदूषित पानी के कारण दमा, कैंसर, हृदय रोग और त्वचा संबंधी बीमारियां आम होगईं हैं।

कहने को तो केन्द्र व राज्य सरकारें अरबों-ख़रबों की योजनाएं चला रहीं हैं, लेकिन भ्रष्टाचार के चलते गंगा और यमुना जैसी पवित्र नदियों के प्रदूषणमुक्त हाने का सपना भी महज कल्पना बनकर रह गई है और आज भी औद्योगिक कचरे और सीवेज के कारण ये पवित्र नदियां ही नहीं, वरन् हज़ारों अन्य नदियाँ बुरी तरह प्रदूषित हैं। मीठे पानी के स्त्रोत दूषित होने से पेयजल संकट गहराता जा रहा है। इतना ही नहीं, रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के अत्यधिक प्रयोग से मिट्टी की उर्वरता नष्ट हो रही है और फसलों में भी ज़हरीले तत्त्व शामिल हो रहे हैं।

सरकार द्वारा उठाए जा रहे क़दम

क़ानून में व्यवस्थाः वायु अधिनियम (1981) और जल अधिनियम (1974) के माध्यम से प्रदूषण फैलाने वाली औद्योगिक इकाइयों पर सख्त कार्यवाही किए जाने का प्रावधान है।

स्वच्छ भारत अभियानः ठोस अपशिष्ट प्रबंधन और

सिंगल-यूज प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगाकर कचरा प्रबंधन को बेहतर बनाने की योजना।

क्या सरकारी योजनाएं प्रभावी हैं?

सरकारी योजनाओं की प्रभावशीलता और भ्रष्टाचार के बीच का संतुलन एक गंभीर विषय है। हाल के घटनाक्रमों और रिपोर्टों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि जहाँ एक ओर भारत ने कुछ क्षेत्रों में प्रगति की है, वहीं दूसरी ओर ज़मीनी स्तर पर व्याप्त भ्रष्टाचार और प्रशासनिक खामियां योजनाओं के पूर्ण लाभ को जनता तक पहुँचने से रोक रही हैं।

फंड का दुरुपयोग: दिल्ली में 2017 से 2025 के बीच प्रदूषण नियंत्रण के लिए आवंटित 53,052 करोड़ रुपए के उपयोग पर सवाल उठाए गए हैं, क्योंकि वायु गुणवत्ता में कोई खास सुधार नहीं दिखा।

संस्थागत भ्रष्टाचार: सितंबर 2024 में सीबीआई ने दिल्ली प्रदूषण नियंत्रण समिति के एक वरिष्ठ इंजीनियर को रिश्वत लेते रंगे हाथ पकड़ा, जिसके पास से 2.39 करोड़ रुपए नक़द बरामद हुए।

कैग की रिपोर्ट: नियंत्रक और महालेखा परीक्षक (कैग) की 2025 की रिपोर्टों ने पर्यावरणीय मंजूरी की प्रक्रिया में गंभीर खामियों, देरी और निगरानी की कमी को उजागर किया है।

वास्तविक स्थिति क्या है?

योजनाएं कागजों पर ज़्यादा प्रभावी दिख रही हैं। स्थानीय स्तर पर वायु की गुणवत्ता और नदियों की सफाई, वृक्षारोपण आदि में भ्रष्टाचार और जवाबदेही की कमी एक बड़ी बाधा बनी हुई है। विशेषज्ञों का मानना है कि जब तक प्रदूषण नियंत्रण बोर्डों की कार्यप्रणाली में पारदर्शिता नहीं आएगी और फंड के उपयोग का ऑडिट सार्वजनिक नहीं होगा, तब तक भ्रष्टाचार का यह 'दीमक' योजनाओं को खाता रहेगा।

हमें स्वयं जागरूक होना पड़ेगा

यदि पर्यावरण को स्वच्छ रखना है और प्रदूषण से मुक्ति पानी है, तो हमें सरकार व भ्रष्ट नौकरशाहीतंत्र के भरोसे नहीं रहना है, बल्कि व्यक्तिगत और सामाजिक स्तर पर कार्य करने की ज़रूरत है। सबसे पहले अपने आसपास अधिक से अधिक पौधारोपण कर उन्हें संरक्षित करें, क्योंकि हरित क्षेत्र बढ़ने से न केवल हवा शुद्ध होगी, बल्कि मिट्टी का क्षरण भी रुकेगा। किसान जैविक खेती और पारंपरिक जल संरक्षण तकनीकें अपनाएं तथा प्लास्टिक का उपयोग पूरी तरह बंद करने का प्रयास करें। साथ ही हमें यह प्रयास भी करना है कि भ्रष्ट नौकरशाह क़ानून के दायरे में आ सकें।

भारत दुनिया का छठा सबसे प्रदूषित देश

भारत शीर्ष सबसे प्रदूषित देशों की सूची में लगातार बना हुआ है। वर्ल्ड एयर क्वालिटी रिपोर्ट 2025 के अनुसार, भारत दुनिया का छठवां सबसे प्रदूषित देश है, लेकिन भारत की स्थिति चिंताजनक इसलिए है, क्योंकि दुनिया के 100 सबसे प्रदूषित शहरों में से 66 भारत में हैं। भारत के इतना प्रदूषित होने के मुख्य कारण निम्नलिखित हैं-

औद्योगिक क्षेत्र: भारत में लगभग 51 प्रतिशत वायु प्रदूषण का मुख्य कारण उद्योग हैं। कोयला आधारित थर्मल पावर प्लांट और ईंट भट्टे भारी मात्रा में सल्फर डाइऑक्साइड और नाइट्रोजन ऑक्साइड उत्सर्जित करते हैं।

वाहनों का धुआं: शहरों में प्रदूषण का 27 प्रतिशत हिस्सा वाहनों से आता है। पुरानी डीजल गाड़ियां, ट्रैफिक जाम और सार्वजनिक परिवहन की कमी के कारण ज़हरीली गैसों का स्तर बढ़ता जा रहा है।

...तो हमारा विकास किस काम का?

पर्यावरण असंतुलन एक गंभीर संकट है, लेकिन इसका समाधान हमारे स्वयं के प्रयासों में छिपा है। यदि हमने आज अपनी जीवनशैली में बदलाव नहीं किया, तो आने वाली पीढ़ियों का जीवन नर्क़तुल्य हो जाएगा। समय आ गया है कि हम विकास और पर्यावरण के बीच संतुलन बनाना सीखें, प्रकृतिप्रदत्त चीजों का दुरुपयोग न करें। विचार करिए कि अगली पीढ़ी को अगर हम न हरियाली दे पाए, न स्वच्छ हवा और न ही साफ पानी, तो हमारा विकास किस काम का?

अलोपी शुक्ल
सिद्धाश्रम

कल्पवृक्ष (पारिजात)

केवल पौराणिक कहानी नहीं, भारत के कुछ विशेष स्थानों पर आज भी है विद्यमान

♣♣♣♣♣♣♣♣♣♣♣♣♣♣♣♣♣♣♣♣♣♣♣♣♣♣♣♣♣♣♣

जड़ से लेकर फूल, पत्ती व फल, सभी हैं औषधीय गुणों से भरपूर

- पाँच पत्तियों से ही पूरी हो सकती है दैनिक पोषण की ज़रूरत
- उम्र बढ़ाने और अनेक रोगों को ठीक करने में सहायक
- उत्तरप्रदेश के बाराबंकी के बोरोलिया में है कल्पवृक्ष

भारतीय संस्कृति और पौराणिक कथाओं में कल्पवृक्ष को इच्छापूर्ति करने वाले वृक्ष के रूप में बताया गया है और आयुर्वेद की दृष्टि से इसके गुण मानवजीवन के लिए अत्यन्त उपयोगी व प्रभावकारी हैं। इस वृक्ष का वैज्ञानिक नाम ओलिया कास्पीडाटा है।

पुराणों के अनुसार, समुद्र मंथन के दौरान निकले 14 रत्नों में से एक कल्पवृक्ष था, जिसे स्वर्ग के अधिपति इंद्र को दे दिया गया था और इन्द्र ने इसकी स्थापना हिमालय के उत्तर में सुरकानन वन में कर दी थी। पद्म पुराण में बताया गया है कि पारिजात ही कल्पवृक्ष है। यह वृक्ष मृत्युलोक में कैसे आया? इस बारे में मान्यता है कि द्वापर युग में भगवान् श्रीकृष्ण अपनी धर्मपत्नी सत्यभामा की इच्छा को पूरा करने के लिए कल्पवृक्ष को पृथ्वी पर लाए थे।

यद्यपि यह वृक्ष दुर्लभ है, लेकिन हमारे देश भारत में कुछ विशेष स्थानों पर आज भी पाया जाता है। रांची, अल्मोड़ा, काशी, नर्मदा के किनारे, कर्नाटक में इस वृक्ष के मिलने के संकेत हैं। उत्तरप्रदेश के बाराबंकी के बोरोलिया में कल्पवृक्ष (पारिजात) विद्यमान है। माना जाता है कि इस पेड़ को यहाँ पांडवों के द्वारा लाकर लगाया गया था। यह वृक्ष उत्तरप्रदेश के प्रयागराज, सुल्तानपुर और हमीरपुर के यमुना पट पर भी स्थित है और अपने विशाल परिधि के लिए प्रसिद्ध है। उत्तराखंड के जोशीमठ में इस वृक्ष (शहतूत प्रजाति) के नीचे आद्य

उत्तरप्रदेश के हमीरपुर में यमुना के तट पर स्थित 1000 वर्ष पुराना ऐतिहासिक कल्पवृक्ष

शंकराचार्य ने बैठकर तपस्या की थी। मध्यप्रदेश में ग्वालियर के पास कोलारस में, राजस्थान में अजमेर के पास मांगलियावास में भी एक-एक कल्पवृक्ष मौजूद है।

आयुर्वेद के अनुसार, कल्पवृक्ष जड़ से लेकर फल तक औषधीय गुणों से भरपूर है। इसके फल में संतरे से छह गुना अधिक विटामिन सी और गाय के दूध से दोगुना अधिक कैल्शियम होता है तथा यह रक्तचाप को नियंत्रित करने और कोलेस्ट्रॉल को कम करने में सहायक माना जाता है। इतना ही नहीं, इसके फलों का सेवन करने से चेहरे पर झुर्रियाँ नहीं आतीं और इसके बीजों का तेल लगाने से चमड़ी (स्किन) में सिकुड़न नहीं आने पाती।

कल्पवृक्ष की पत्ती को सुखाकर पाउडर बनाकर तथा पत्तियों को उबालकर सेवन किया जा सकता है। इस वृक्ष की छाल, फल और फूल का उपयोग औषधि तैयार करने में किया जाता है।

उम्र बढ़ाने में सहायकः हमारा आयुर्वेद कहता है कि इस वृक्ष की तीन से पाँच पत्तियों का सेवन करने से दैनिक पोषण की ज़रूरत पूरी होजाती है और इसकी पत्तियाँ उम्र बढ़ाने में भी सहायक होती हैं, क्योंकि इसके पत्ते एंटी-ऑक्सीडेंट होते हैं।

मधुमेह नियंत्रणः वैज्ञानिक शोधों के अनुसार, कल्पवृक्ष का अर्क रक्त में शर्करा के स्तर को बढ़ने से रोकता है और इसके पाउडर को भोजन के साथ लेने से इंसुलिन की सक्रियता बढ़ती है और ग्लूकोज का स्तर नियंत्रित रहता है।

अन्य अनेक रोगों में लाभकारीः यह कब्ज और एसिडिटी में कारगर है और इसके पत्तों में एलर्जी, दमा, मलेरिया को समाप्त करने की शक्ति समाहित है। इसके बीजों का तेल

उत्तरप्रदेश के बाराबंकी में वनवास के समय पाण्डवों द्वारा रोपा गया कल्पवृक्ष

हृदय रोगियों के लिए फायदेमंद साबित हुआ है। इतना ही नहीं, गुर्दे के रोगियों के लिए भी इसकी पत्तियों और फूलों का रस लाभदायक सिद्ध हुआ है।

रोगप्रतिरोधक क्षमता: इसकी पत्तियों और छाल का काढ़ा बुखार और संक्रमण से लड़ने में मदद करता है।

अमीनो एसिड: विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के अनुसार, हमारे शरीर के लिए आवश्यक 08 अमीनो एसिड में से 06 कल्पवृक्ष में पाए जाते हैं।

पर्यावरण के लिए: इस वृक्ष की विशेषता यह है कि यह जहाँ भी पाया जाता है, वहाँ दूर-दूर तक वायु प्रदूषण को दूर कर देता है।

पानी का भंडारण: इस वृक्ष को पानी के भंडारण के लिए उपयोग में लिया जा सकता है, क्योंकि वयस्क पेड़ अंदर से खोखले होजाते हैं, फिर भी बहुत मज़बूत होते हैं, जिसमें एक लाख लीटर तक पानी संग्रह करने की क्षमता होती है।

पाँच हज़ार वर्ष की उम्र: यह वृक्ष लगभग 70 फुट ऊंचा होता है और तने का व्यास 35 फुट तक होता है। उत्तरप्रदेश के बाराबंकी के बोरोलिया में विद्यमान कल्पवृक्ष की उम्र कार्बन डेटिंग से वैज्ञानिकों ने पाँच हज़ार वर्ष से भी अधिक बताई है, जबकि ग्वालियर के पास कोलारस में मौजूद इस वृक्ष की उम्र लगभग दो हज़ार वर्ष बताई जाती है।

पर्यावरणविदों का कहना है: इस वृक्ष की प्राचीनता और औषधीय महत्त्व को देखते हुए पर्यावरणविदों का कहना है कि कल्पवृक्ष का संरक्षण न केवल हमारी आस्था, अपितु स्वास्थ्य सुरक्षा के लिए अतिआवश्यक है।

सिद्धाश्रम धाम में अविराम श्री दुर्गाचालीसा पाठ के 29 वर्ष पूर्ण

पंचज्योति शक्तितीर्थ सिद्धाश्रम धाम एक ऐसा आध्यात्मिकस्थल है, जहाँ पहुंचते ही काल का चक्र थमा हुआ सा प्रतीत होता है और यहाँ केवल माता भगवती आदिशक्ति जगत् जननी जगदम्बा और ऋषिवर सद्गुरुदेव श्री शक्तिपुत्र जी महाराज की चेतनाशक्ति का आभास होता है और यही आभास हमारे हृदय में भक्ति, ज्ञान व आत्मशक्ति का संचार करता है।

15 अप्रैल 2026 को श्री दुगार्चालीसा पाठ के 29 वर्ष पूर्ण होने और 30वें वर्ष में प्रवेश पर सिद्धाश्रम धाम में ऋषिवर के शिष्य व 'माँ' के हज़ारों भक्त पहुंचे और पूरी तन्मयता के साथ उन्होंने मूलध्वज साधना मंदिर में साधनात्मक क्रमों का लाभ लेने के साथ ही श्री दुर्गाचालीसा अखण्ड पाठ मंदिर में 'माँ' का गुणगान करके आनन्द से अविभूत रहे। सभी ने अन्नपूर्णा भंडारे में जातपात के भेदभाव से ऊपर उठकर एक साथ (पूड़ी-सब्जी, दाल-चावल) भोजन प्रसाद ग्रहण किया। सायंकालीन बेला में गुरुवरश्री के चरणवन्दन के उपरान्त, गाय के शुद्ध घी व सूजी से निर्मित हलुआ प्रसाद ग्रहण करके सभी ने अपने भाग्य को सराहा।

ज्ञातव्य है कि 23 जनवरी 1997 को सद्गुरुदेव श्री शक्तिपुत्र जी महाराज ने मानवता के कल्याणार्थ इस आश्रम की नीव रखी थी और 15 अप्रैल 1997 को उनके द्वारा अनन्तकाल के लिए श्री दुर्गाचालीसा अखण्ड पाठ प्रारम्भ कराया गया, जो अविराम 29 वर्ष पूर्ण कर चुका है। गत 29 वर्ष से बिना एक क्षण रुके, माता भगवती का गुणगान यहाँ निरंतर गूँज रहा है और निरंतरता लिए पावन ध्वनि तरंगों ने सिद्धाश्रम धाम के कण-कण को चैतन्य कर दिया है, जिससे यहाँ आने वाले हर व्यक्ति को मानसिक शांति का अनुभव होता है। सिद्धाश्रम धाम में चल रहे 'माँ' के गुणगान का दिव्य अनुष्ठान अनन्तकाल तक चलता रहेगा और इससे आने वाली मानवीय पीढ़ियां युग-युगान्तर तक लाभान्वित होती रहेंगी।

29 वर्षों से निरन्तर चल रहा श्री दुर्गाचालीसा अखण्ड पाठ यह सिद्ध करता है कि यदि संकल्प पवित्र हो, तो दैवीयशक्तियां सदैव सहायक होती हैं और यह अखंड पाठ आने वाली पीढ़ियों

के लिए सनातनधर्म की जीवंतता का प्रमाण बना रहेगा।

सद्गुरुदेव जी महाराज का चिंतन है कि ''नशे-मांसाहार से मुक्त चरित्रवान्, चेतनावान्, पुरुषार्थी और परोपकारमय जीवन ही वास्तविक जीवन है। नशा, मांसाहार और चरित्रहीनता केवल शरीर का ही नाश नहीं करते, बल्कि विवेक को भी नष्ट कर देते हैं। अतः यदि अपने जीवन को पतन से बचाना है, तो पूर्णतः नशामुक्त, चरित्रवान् और शाकाहारी जीवन अपनाएं।''

सबसे बड़ा धर्म मानवता

धर्म केवल अनुष्ठानों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि दुःखियों के आंसू पोंछना, निर्बल को सहारा देना और अनीति-अन्याय-अधर्म के विरुद्ध खड़े होना तथा जिस राष्ट्र में हम रहते हैं, उस राष्ट्र की अस्मिता की रक्षा ही वास्तविक धर्म का पालन करना है।

'माँ' पर अटूट विश्वासः आदिशक्ति जगत् जननी माता भगवती की भक्ति में वह सामर्थ्य है, जो असंभव को संभव बना सकती है। 'माँ' के प्रति अटूट श्रद्धा और अटूट विश्वास के साथ की गई साधना कभी निष्फल नहीं जाती।

पुनर्जागरण के वर्षः पंचज्योति शक्तितीर्थ सिद्धाश्रम के ये 29 वर्ष भारतीय सनातन परंपरा के पुनर्जागरण के वर्ष हैं और यह आध्यात्मिक पवित्र स्थान आज के भौतिकवादी युग में शांति के लिए भटक रहे मनुष्यों के लिए एक प्रकाश स्तंभ के समान है।

हम सब एक ही चेतना के अंश हैं

आद्य शंकराचार्य

हमारे आध्यात्मिक इतिहास में वैशाख मास के शुक्लपक्ष की पंचमी तिथि अतिमहत्त्वपूर्ण है। इसी पावन तिथि पर केरल के कालड़ी ग्राम में उन महानविभूति का अवतरण हुआ था, जिन्होंने खंडित होती भारतीय संस्कृति को एकता के सूत्र में पिरोया और जिन्हें सम्पूर्ण जगत् आद्य शंकराचार्य के नाम से जानता है।

आचार्य शंकर ने मात्र 32 वर्ष की अल्पायु में जो कार्य किए, वे अनन्तकाल तक मानवता का मार्गदर्शन करते रहेंगे। उन्होंने 'अद्वैत वेदांत' के सिद्धांत का प्रतिपादन किया, जिसका मूल मंत्र है– 'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरः।' अर्थात् ब्रह्म ही सत्य है, जगत् मिथ्या है और जीव ब्रह्म से अलग नहीं है।

चार पीठों की स्थापना

भारत की भौगोलिक स्थिति के अनुरूप आध्यात्मिक एकता को सुदृढ़ करने के लिए आद्य शंकराचार्य जी ने चारों दिशाओं में चार मठों की स्थापना की। पूर्व में गोवर्धन मठ (जगन्नाथ पुरी), पश्चिम में शारदा मठ (द्वारका) उत्तर में ज्योतिर्मठ (बदरिकाश्रम) और दक्षिण में शारदा पीठ (शृंगेरी)। इन मठों की स्थापना का मुख्य उद्देश्य सनातनधर्म की मर्यादा की रक्षा करना और वेदों के ज्ञान का प्रसार करना था। आज भी ये पीठ भारतीय संस्कृति के स्तंभ बने हुए हैं।

आद्य शंकराचार्य जी ने न केवल उपनिषदों, ब्रह्मसूत्र और श्रीमद्भगवद्गीता पर भाष्य (टीका) लिखकर उन्हें सुलभ बनाया, बल्कि आम जनमानस के लिए 'भज गोविंदम' और 'सौंदर्य लहरी' जैसे भक्तिपूर्ण स्त्रोतों की भी रचना करके ज्ञान और भक्ति का अद्भुत समन्वय पेश किया।

संन्यास परंपरा

सनातनधर्मावलम्बियों को संगठित करने के लिए उन्होंने संन्यासियों के 'दशनामी संप्रदाय' का गठन किया और शास्त्रार्थ के माध्यम से विभिन्न मत-मतांतरों के बीच समन्वय स्थापित किया।

वर्तमान प्रासंगिकता

आद्य शंकराचार्य जी का 'अद्वैत' का संदेश आज के वैचारिक संघर्ष एवं अशांति के काल में सबसे अधिक प्रासंगिक है। यह सिद्धांत हमें सिखाता है कि हम सब एक ही चेतना के अंश हैं, जो भेदभाव और द्वेष को मिटाने का एकमात्र मार्ग है।

शंकराचार्य के प्रेरक विचार

मोह का त्याग: मोह से ग्रसित व्यक्ति सत्य को नहीं देख पाता, जैसे बादलों के कारण सूर्य दिखाई नहीं देता।

ज्ञान की शक्ति: आत्मज्ञान के बिना मुक्ति संभव नहीं है, ठीक वैसे ही जैसे बिना आग के खाना नहीं पक सकता।

सत्य की खोज: सत्य की खोज के लिए अहंकार का विसर्जन अनिवार्य है। जब तक अहंकार है, तब तक ईश्वरीय शक्ति का अनुभव संभव नहीं।

वाणी का संयम: मौन ही सबसे बड़ा भाषण है और शांति ही सबसे बड़ी शक्ति है।

आत्मबोध: स्वयं को जानना ही सबसे बड़ा तीर्थ है और जो अपने भीतर के परमात्मा को पा लेता है, उसे बाहर खोजने की आवश्यकता नहीं रहती।

इन्द्रिय नियंत्रण: बुद्धिमान व्यक्ति को चाहिए कि वह अपनी इंद्रियों को वश में रखे और निरंतर परमात्मा के ध्यान में लीन रहे।

जनजागरण

जो नशे-मांसाहार से मुक्त रहेंगे, उन्हें ही प्राप्त होगी बाबा विश्वनाथ की कृपा: बहन पूजा शुक्ला

उत्तरप्रदेश के वाराणसी में 'नशामुक्त काशी-खुशहाल काशी' के लक्ष्य को लेकर दिनांक 04 अप्रैल 2026 को भगवती मानव कल्याण संगठन की केन्द्रीय अध्यक्ष शक्तिस्वरूपा बहन सिद्धाश्रमरत्न पूजा शुक्ला जी और केन्द्रीय महासचिव सिद्धाश्रमरत्न अजय अवस्थी जी की अगुआई में विशाल नशामुक्ति जनजागरण पदयात्रा निकाली गई। इस यात्रा में हज़ारों की संख्या में गुरुभाई-बहनों व क्षेत्रीय जनमानस के साथ सिद्धाश्रम चेतना आरूणी जी भी शामिल रहीं। यात्रा का जगह-जगह फूल-मालाओं से स्वागत किया गया।

यह पदयात्रा बीएचयू सिंह द्वार से रविन्द्रपुरी रोड, आईपी विजया तिराहा, कमच्छा, कुबेर चौराहा, सिगरा तिराहा, इंग्लिशिया लाईन, फूलमंडी, मलदहिया चौराहा, पटेल चौक, आंध्रा पुल और नदेसर होते हुए बड़ी कटिंग ग्राउण्ड पहुंचकर आमसभा के रूप में परिवर्तित होगई।

आमसभा को सम्बोधित करते हुए शक्तिस्वरूपा बहन पूजा शुक्ला जी ने कहा कि ''परम पूज्य गुरुवरश्री के निर्देशन पर यह नशामुक्ति जनजागरण पदयात्रा निकाली गई। यह काशी आस्था का केन्द्र है, जिसे मोक्ष की नगरी कहा जाता है, ज्ञान की

नगरी कहा जाता है और इस नगरी को स्वयं महादेव ने, स्वयं बाबा विश्वनाथ ने बसाया है और ऐसी पावन धरती पर हम सभी भाई-बहन एकत्रित हुए हैं। आप सभी लोगों ने यहाँ पदयात्रा निकालकर काशी नगर के लोगों को नशामुक्त जीवन अपनाने का संदेश दिया, निश्चय ही इसका व्यापक प्रभाव पड़ेगा।

जब तक पूरा देश नशामुक्त नहीं होजाता, तब तक सतत चलती रहेंगी जनजागरण पदयात्राएं: अजय अवस्थी

बहुत से लोगों ने बताया कि भगवान् शिव के नाम पर लोग भांग, धतूरा चढ़ाते हैं, भांग पीते हैं और कहते हैं कि यह शिव जी का प्रसाद है ! मैं भगवान् शिव की, बाबा विश्वनाथ की इस धरती से कहती हूँ कि उनके नाम से जो नशा करते हैं, उनको कभी भी बाबा विश्वनाथ का आशीर्वाद नहीं प्राप्त हो सकता। अरे, शंकर भगवान् ने, बाबा विश्वनाथ ने समाज की रक्षा के लिए हलाहल (विष) का पान किया था, लेकिन उस विष को गले के नीचे नहीं उतरने दिया था, क्योंकि हृदय में माता आदिशक्ति जगत् जननी जगदम्बा का वास है और इसलिए गले से नीचे नहीं जाने दिया कि समाज नशारूपी ज़हर से दूर रहे। लेकिन, आज भगवान् शिव के नाम पर इतना बड़ा पाप हो रहा है ! पाप के भागीदार मत बनिए और अपने विवेक को जाग्रत् करिए। बाबा विश्वनाथ की कृपा उन्हें ही प्राप्त होगी, जो नशे-मांसाहार से मुक्त रहकर उनके दर्शन भक्तिभाव से करेंगे।''

भगवती मानव कल्याण संगठन के केन्द्रीय महासचिव सिद्धाश्रमरत्न अजय अवस्थी जी ने अपनी सुपरिचित शैली में कहा कि ''समाजकल्याण के लक्ष्य को लेकर, 'नशामुक्त काशी-खुशहाल काशी' के लक्ष्य को लेकर यह नशामुक्ति जनजागरण पदयात्रा इस धार्मिक नगरी में निकाली गई। ध्यान रखें, नशामुक्त जीवन ही खुशहाली का रास्ता तय कर सकता है और भगवती मानव कल्याण संगठन की नशामुक्ति पदयात्राएं तब तक चलती रहेंगी, जब तक कि हमारी आवाज़ जन-जन तक नहीं पहुंच जाती और पूरा देश नशामुक्त नहीं होजाता। आप लोगों को आज से नहीं, बल्कि अभी से ज़ागरूक होजाना है और स्वयं नशामुक्त रहते हुए समूचे उत्तरप्रदेश को नशामुक्त जीवन अपनाने के लिए प्रेरित करते रहना है। इस यात्रा में शामिल और यहाँ पर उपस्थित सभी गुरुभाई-बहनों तथा क्षेत्रीय जनमानस को परम पूज्य सद्गुरुदेव श्री शक्तिपुत्र जी महाराज ने अपना आशीर्वाद प्रदान किया है।''

वाराणसी (काशी) में निकाली गई नशामुक्ति पदयात्रा, हज़ारों लोग हुए शामिल

धन कमाने के लिए कभी भी बेईमानी, छल-कपट का रास्ता न अपनाएं : बहन पूजा शुक्ला

ऋषिवर सद्गुरुदेव श्री शक्तिपुत्र जी महाराज के आशीर्वाद से सद्भावनापूर्ण समाज निर्माण की कल्पना को साकाररूप प्रदान करने के लिए दिनांक 4-5 अप्रैल 2026 को गुरुजन्मस्थली शक्ति सेवा भवन, ग्राम-भद्रवास (भदवा), ज़िला-फतेहपुर, उत्तरप्रदेश में 24 घंटे का श्री दुर्गाचालीसा अखंड पाठ सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के शुभारम्भ में उपस्थित सभी भक्तों ने सामूहिक रूप से 'माँ'-गुरुवर के जयकारे लगाए।

कार्यक्रम की समापन बेला पर भगवती मानव कल्याण संगठन की केन्द्रीय अध्यक्ष शक्तिस्वरूपा बहन सिद्धाश्रमरत्न पूजा शुक्ला जी ने भावपूर्ण शब्दों में कहा कि ''धन्य है यह गांव, धन्य हैं यहाँ के लोग, जिन्होंने सद्गुरुदेव श्री शक्तिपुत्र जी महाराज का बचपन देखा, उनकी लीलाएं देखीं, उनकी साधनाएं देखीं और हम लोग भी धन्य हैं, जिन्हें 'माँ'-गुरुवर की कृपा व आशीर्वाद से इस पावन धरती पर बैठकर साधना करने का सौभाग्य मिला। जैसा कि आप सभी लोग जानते हैं

कि इस कलिकाल में जो लोग परम पूज्य गुरुवरश्री से जुड़े हैं, गुरुदेव जी का सान्निध्य प्राप्त करके साधनापथ पर बढ़ रहे हैं,

हमें नवीन ऊर्जा प्रदान करता है चालीसा पाठ : सिद्धाश्रम चेतना आरूणी

उनका जीवन सुख-शांति-सन्तोष से परिपूर्ण है और उन्हें कोई भी समस्या विचलित नहीं कर सकती, क्योंकि समस्याओं के समाधान हेतु सद्गुरुदेव जी महाराज का आशीर्वाद सदैव बना रहता है।

परम पूज्य गुरुवरश्री आप लोगों के जीवन में आने वाली समस्याओं को दूर करते रहें, आप सदैव समाजकल्याण की दिशा मेंआगे बढ़ते रहें, अपने विवेक का उपयोग करें और कभी भी किसी के बहकावे में न आएं। साधना के पथ पर जब भी कोई समस्या आए, तो गुरुदेव जी का स्मरण करें, उनके चिंतनों को पढ़कर उस पर अमल करें, निश्चित रूप से आपकी समस्याओं के समाधान का रास्ता निकलेगा। इतना ज़रूर करिएगा कि भले ही नमक-रोटी खाना पड़े, धन कमाने के लिए कभी भी बेईमानी, छल-कपट का रास्ता न अपनाएं, दूसरों को पीड़ा पहुंचाकर धनार्जन का प्रयास न करें, क्योंकि ईमादारीपूर्वक कर्मबल से उपार्जित धन ही फलीभूत होता है, जबकि बेईमानी से कमाया गया धन, बेईमानी के रास्ते से ही चला जाता है। वह धन न आपके काम आएगा और न आपके बच्चों के काम आएगा।

सच्चाई-ईमानदारी का जीवन जिएं, प्रतिपल अपने संस्कारों को बढ़ाते रहें, बच्चों को सूर्योदय से पहले उठाएं और उन्हें साधना की ओर बढ़ाएं, निश्चितरूप से उनकी बुद्धि कुशाग्र होगी और वे सदैव आज्ञाकारी बनकर जीवनपथ पर आगे बढ़ते हुए आपके नाम के साथ देश का नाम रोशन करेंगे।''

सिद्धाश्रम चेतना आरूणी जी ने उपस्थित गुरुभाई-बहनों और ग्रामवासियों से 'जय माता की-जय गुरुवर की' कहकर अभिवादन करते हुए कहा कि ''माता भगवती आदिशक्ति जगत् जननी जगदम्बा की कृपा और परम पूज्य गुरुवरश्री के आशीर्वाद से यह दिव्य अनुष्ठान सम्पन्न हुआ। यह चालीसा पाठ हमें नवीन ऊर्जा प्रदान करता है, जिससे हमारी कार्यक्षमता में वृद्धि होती है। 'माँ'-गुरुवर से मेरी यही प्रार्थना है कि आप सभी को सुख-शांति-समृद्धि प्रदान करें।''

संगठन के केन्द्रीय महासचिव सिद्धाश्रमरत्न अजय

अवस्थी जी ने सारगर्भित शब्दों में कहा कि ''आज यहाँ 24 घंटे तक 'माँ' का गुणगान चला, 'माँ'-गुरुवर की दिव्य आरती हुई। आप लोगों के चेहरे पर आनन्द की रेखाएं स्पष्ट दिखाई दे रही हैं। कुछ लोग तो अपनी मनोभावना को छिपा नहीं सके और उन्होंने कहा कि यहाँ आयोजित श्री दुर्गाचालीसा पाठ में और 'माँ'-गुरुवर की दिव्य आरती से जितना आनन्द मिला, कहीं अन्यत्र के कार्यक्रमों में नहीं मिलता। जिस तरह श्रीराम का गुणगान जगह-जगह होता है, श्रीराम की आरती अनेक मंदिरों में होती है, लेकिन जितना आनन्द श्रीरामजन्मभूमि मंदिर अयोध्या में मिलता है, अन्यत्र उतना आनन्द नहीं मिलता, वहाँ भक्ति का एक अलग ही अहसास होता है। उसी तरह आज इस गुरुजन्मस्थली पर यह दिव्य अनुष्ठान सम्पन्न हुआ और 'माँ'-गुरुवर की दिव्य आरती सम्पन्न की गई, तो उसका अलौकिक अहसास तो होना ही था।

मैं इतना ही कहूँगा कि आप लोग नित्यप्रति पवित्रभाव से 'माँ'-गुरुवर की साधना-आराधना करें। हमारे मन में छल-कपट, ईर्ष्या-द्वेष का अंशमात्र भी भाव नहीं आना चाहिए और कभी भी अपनी सम्पन्नता का, अपनी सामर्थ्य का अहंकार न करें, क्योंकि मानवजीवन के लिए ये भयानक शत्रु हैं।''

नशामुक्ति सद्भावना जनजागरण पदयात्रा, बिलासपुर, छत्तीसगढ़

नशा केवल एक व्यक्ति को नहीं, बल्कि पूरे परिवार और समाज को नष्ट कर देता है: बहन पूजा शुक्ला

नशे के अंधकार को मिटाकर समाज में स्वस्थ भविष्य का प्रकाश फैलाने के संकल्प को लेकर भगवती मानव कल्याण संगठन के द्वारा दिनांक 11 अप्रैल 2026 को छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में विशाल नशामुक्ति सद्भावना जनजागरण पदयात्रा निकाली गई। बिलासपुर में आयोजित इस यात्रा के माध्यम से न केवल सरकार के द्वारा चलाए जा रहे शराब के कारोबार के विरुद्ध हुंकार भरी गई, बल्कि समाज को नशेरूपी बुराई से दूर रहने के लिए प्रभावी संदेश दिया गया। पदयात्रा में संगठन के हज़ारों कार्यकर्ताओं के साथ क्षेत्रीय गणमान्य नागरिक, छात्र, ग्रामीण महिलाएं, पुरुष व बच्चे शामिल हुए।

संगठन की केन्द्रीय अध्यक्ष शक्तिस्वरूपा बहन पूजा शुक्ला जी एवं संगठन के केन्द्रीय महासचिव सिद्धाश्रमरत्न अजय अवस्थी जी के नेतृत्व में यह नशामुक्ति सद्भावना जनजागरण पदयात्रा लाल बहादुर शास्त्री ग्राउंड से सिटी कोतवाली चौक, तेलीपारा, पुराना बस स्टैण्ड, अग्रसेन चौक, मगर पारा चौक, मंदिर चौक जरहाभाठा, नेहरू चौक, देवकीनंदन चौक, गोलबाज़ार होते हुए वापस लाल बहादुर शास्त्री स्कूल ग्राउण्ड पहुंचकर आमसभा के रूप में तब्दील होगई।

आमसभा में उपस्थित जनसमूह और गुरुभाई-बहनों को संबोधित करते हुए शक्तिस्वरूपा बहन पूजा शुक्ला जी ने कहा कि ''हमने जो नशे के विरुद्ध यह यात्रा निकाली और हम नशामुक्त समाजनिर्माण के लिए जो तपस्या कर रहे हैं, संघर्ष कर रहे हैं, ऋषिवर सद्गुरुदेव श्री शक्तिपुत्र जी महाराज ने इसका फल व आशीर्वाद पहले ही निर्धारित कर दिया है। परम पूज्य गुरुवर ने हमें बताया है कि 'हमारा यह जीवन केवल आत्मकल्याण के लिए नहीं है, बल्कि हम अपना आत्मकल्याण तभी कर पाएंगे, जब जनकल्याण की दिशा में हमारे क़दम आगे बढ़ेंगे।'

आज जो हम समाज के उत्थान के लिए यह कार्य कर रहे हैं, उसमें एक सच्चिदानंद ऋषि का आशीर्वाद व माता भगवती आदिशक्ति जगत् जननी जगदम्बा की असीम कृपा शामिल है, तभी तो इस भीषण धूप में भी हमारे क़दमों ने कहीं विराम नहीं लिया और आगे बढ़ते रहे। हमारा लक्ष्य पावन पवित्र है कि पूरा समाज नशामुक्त जीवन अपनाए, क्योंकि नशा केवल एक व्यक्ति को नहीं, बल्कि पूरे परिवार और समाज को नष्ट कर देता है। तो आइए, इस धर्मयुद्ध में शामिल होकर एक नए समाज की रचना करें। इस धर्मयुद्ध में आपको अस्त्र-शस्त्र चलाने की आवश्यकता नहीं, केवल परम पूज्य गुरुवरश्री से जुड़कर उनकी विचारधारा पर चलने की ज़रूरत है। आपके अस्त्र-शस्त्र हैं, साधारण परिवेश, माथे पर कुंकुम का तिलक, गले में रक्षाकवच,

एक स्वस्थ समाजनिर्माण का आधार है यह नशामुक्ति जनजागरण पदयात्रा : अजय अवस्थी

हाथों में दण्डध्वज और 'माँ' की भक्ति। इनके बल पर हम समाज में बड़े से बड़ा परिवर्तन डाल सकते हैं और हमारा सनातनधर्म आगे बढ़ता चला जाएगा।

छत्तीसगढ़ को धान का कटोरा कहा जाता था, लेकिन शासन की कथित ग़लत नीतियों के कारण अब शराब का कटोरा कहा जाने लगा है। गांव-गांव से आवाज़ें उठ रहीं हैं कि शराब बन्द होनी चाहिए, महिलाएं त्रस्त हैं, बच्चे परेशान हैं, जिसके चलते उन्हें विरोध का रास्ता अख़्तियार करना पड़ा और वे सड़क पर उतरकर शराब बन्द करवाने के लिए आवाज़ उठा रहे हैं, लेकिन प्रदेश सरकार कुछ सुनना ही नहीं चाहती। आख़िर यह कब तक चलेगा?

इस कलिकाल के वातावरण में आज यदि हमें सद्गुरुदेव जी महाराज के आशीर्वाद से दो वक्त की रोटी मिल रही है और हम शांति-संतोष का जीवन जी रहे हैं, हमारे बच्चे धर्म के रास्ते पर चलते हुए अपनी संस्कृति को आगे बढ़ा रहे हैं, संस्कारवान हैं, तो इससे बड़ा आशीर्वाद और कुछ हो ही नहीं सकता।''

सिद्धाश्रमरत्न अजय अवस्थी जी ने अपनी चिरपरिचित शैली में कहा कि ''नशामुक्ति का यह जनजागरण अभियान केवल इस एक पदयात्रा तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि ऐसी यात्राएं तब तक निकाली जाती रहेंगी, जब तक कि पूरा छत्तीसगढ़ प्रदेश, पूरा देश नशामुक्त नहीं होजाता।''

आपने कहा कि ''त्रेतायुग में नल और नील को यह सौभाग्य प्राप्त था कि पत्थर पर राम लिख देने से वह पत्थर पानी में नहीं डूबेगा और इस कलियुग में सच्चिदानंदस्वरूप सद्गुरुदेव श्री शक्तिपुत्र जी महाराज के आशीर्वाद और माता जगदम्बे की कृपा से भगवती मानव कल्याण संगठन के कार्यकर्ताओं को वह सौभाग्य मिला है कि वे जिस व्यक्ति के यहाँ दस्तक दे देंगे, जिस घर में दस्तक दे देंगे, वह व्यक्ति, वह घर नशामुक्त होजाएगा।

भगवती मानव कल्याण संगठन पूरे देश में 'नशामुक्त परिवार, नशामुक्त भारत' अभियान के अन्तर्गत आत्मकल्याण और जनकल्याण की भावना को लेकर राष्ट्ररक्षा, धर्मरक्षा और मानवता की सेवा के लिए निःशुल्क, निःस्वार्थ सेवाभाव के साथ 186 ज़िलों में कार्य कर रहा है और लाखों-लाख लोगों को नशामुक्त किया जा चुका है और वे सभी 'माँ'-गुरुवर के चरणों से जुड़ चुके हैं। लेकिन यह मत सोचो कि एक बार नशामुक्ति रैली निकाल देने से पूरा समाज नशामुक्त हो जाएगा। जैसे कि एक पत्थर से सागर में रामेश्वरम सेतु नहीं बना था, अपितु हज़ारों-हज़ार पत्थरों पर जब राम लिखकर डाला गया, तब जाकर सेतु बन सका था। इसी तरह हमें निरन्तर प्रयत्न करते रहना है। यदि हमें पूरे छत्तीसगढ़ को नशामुक्त बनाना

है, तो हज़ारों किलोमीटर की यात्रा करनी पड़ेगी, हज़ारों गांवों की यात्रा करनी पड़ेगी और लोगों को नशे के विरुद्ध जागरूक करना पड़ेगा।

यह नशामुक्ति सद्भावना जनजागरण पदयात्रा नशे के विरुद्ध एक प्रभावी जनान्दोलन है। इस यात्रा को स्थानीय नागरिकों व युवाओं का भारी समर्थन मिला, इसके लिए मैं उन्हें धन्यवाद देता हूँ और वादा करता हूँ कि जब तक पूरा छत्तीसगढ़ नशामुक्त नहीं होजाता, आपके साथ क़दम से क़दम मिलाते हुए मेरे क़दम बढ़ते रहेंगे, क्योंकि एक स्वस्थ समाजनिर्माण का आधार है यह नशामुक्ति जनजागरण पदयात्रा।''

यदि आप भक्ति, ज्ञान और कर्म के क्षेत्र में आगे बढ़ना चाहते हैं, तो गुरुवरश्री के चिन्तनों को पढ़ें: बहन पूजा शुक्ला

ग्राम-सहजपुर, तहसील-केसली, ज़िला-सागर में भक्ति और शक्ति का अनूठा संगम देखने को मिला। भगवती मानव कल्याण संगठन के तत्त्वावधान व ग्रामवासियों के सहयोग से दिनांक 12-13 अप्रैल को 24 घंटे के श्री दुर्गाचालीसा अखण्ड पाठ का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम के शुभारम्भ में 'माँ'-गुरुवर के जयकारों के साथ समूचा ग्राम धर्ममय होगया, जिससे वातावरण में अभूतपूर्व सकारात्मकता का संचार हुआ।

24 घंटे की इस अखंड साधना के उपरान्त भगवती मानव कल्याण संगठन की केन्द्रीय अध्यक्ष शक्तिस्वरूपा बहन सिद्धाश्रमरत्न पूजा शुक्ला जी ने अपने दिव्य उद्बोधन में कहा कि ''परम पूज्य गुरुवर ने कहा है कि प्रकृति का मूल शब्द 'माँ' है और ब्रह्माण्ड का मूल शब्द 'ॐ' है। गुरुवरश्री ने किसी को छिपाकर बीजमंत्र नहीं दिए, बल्कि समाजकल्याण को दृष्टिगत रखते हुए सामूहिक रूप से हमें मंत्र प्रदान किए, तो हमें उस आदिशक्ति जगत् जननी जगदम्बा की आराधना करने का सौभाग्य मिला है, जो इस सम्पूर्ण जगत् की, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की रचयिता हैं।

सद्गुरुदेव जी महाराज ने हमें बार-बार बताया है कि संस्कारवान बनिए, धर्मवान बनिए, चेतनावान् बनिए, कर्मवान बनिए और आप यदि ऐसे बन गए, तो कभी भी लक्ष्य को प्राप्त करने में असफलता का मुंह नहीं देखना पड़ेगा। लोग चमत्कार देखना चाहते हैं, अरे इससे बड़ा चमत्कार और क्या होगा कि गुरुवरश्री से जुड़ने वाले हर शिष्य, हर भक्त का जीवन मर्यादित है, वे नशे-मांसाहार से मुक्त चरित्रवान् जीवन जीते हैं और

उनके बच्चे इतने संस्कारित हैं कि उनके मुख में 'जय माता की-जय गुरुवर की' इस पावन सम्बोधन का वास हो चुका है और अगर ये सब आपके घर में है, अगर आप सात्विकता का जीवन जी रहे हैं, तो फिर जिस सुख-शांति को पाने के लिए लोग इधर-उधर भटक रहे हैं, आपको सहज ही स्वयं मिल जाता है।

आप यदि भक्ति के क्षेत्र में आगे बढ़ना चाहते हैं, तो गोस्वामी तुलसीदास जी के द्वारा रचित श्रीरामचरितमानस पढ़ें, ज्ञान के क्षेत्र में आगे बढ़ना चाहते हैं, तो बाल्मीकि रामायण पढ़ें, यदि कर्मवान बनना चाहते हैं, तो श्रीमद्भगवद्गीता पढ़ें और यदि इन तीनों क्षेत्रों में बढ़ना चाहते हैं, तो सद्गुरुदेव श्री शक्तिपुत्र जी महाराज के चिन्तनों को पढ़ें। क्योंकि, गुरुदेव जी ने इन सभी ग्रन्थों का सार अपने चिन्तनों में समाहित किया है।''

आपकी पहचान आपके विचारों और कर्म से है: सौरभ द्विवेदी

सद्गुरुदेव श्री शक्तिपुत्र जी महाराज के आशीर्वाद से सामाजिक उत्थान के प्रति सतत प्रयासरत भगवती मानव कल्याण संगठन के तत्त्वावधान में दिनांक 17-18 अप्रैल 2026 को यज्ञशाला प्रांगण, ग्राम-सलैया मॉल, तहसील-तेन्दूखेड़ा, ज़िला-दमोह, मध्यप्रदेश में 24 घंटे का श्री दुर्गाचालीसा अखंड पाठ सम्पन्न किया गया। ग्राम सलैया मॉल के यज्ञशाला प्रांगण में श्रद्धा और भक्ति का अनूठा संगम देखने को मिला। आयोजित इस दिव्य अनुष्ठान में हज़ारों धर्मप्रेमियों ने सम्मिलित होकर अपने जीवन में सौभाग्य के एक और क्रम को जोड़ा।

कार्यक्रम की समापन बेला पर भगवती मानव कल्याण संगठन के केन्द्रीय महासचिव और भारतीय शक्ति चेतना पार्टी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सिद्धाश्रमरत्न सौरभ द्विवेदी (अनूप) जी ने उपस्थित जनसमुदाय को सम्बोधित करते हुए कहा कि ''आप सभी लोगों ने यहाँ पर 24 घंटे तक माता भगवती आदिशक्ति जगत् जननी जगदम्बा श्री दुर्गा जी का गुणगान किया। निश्चित रूप से कण-कण में देवी-देवताओं का वास होता है और यदि उन्हें श्रद्धाभाव से पुकारा जाए, तो उनकी कृपा अवश्य मिलती है। यकीन मानिए कि आप लोगों के साथ माता भगवती का आशीर्वाद जुड़ा और जो सद्कर्म करने वाले नहीं हैं, कहीं-न-कहीं पापकर्म करने वाले हैं, अनाचार करने वाले हैं, तो प्रकृति में दण्ड का भी विधान है और ये दण्ड बाधाएं, तनाव, कठिनाईयां और न जाने कितने प्रकार की परेशानियों के रूप में आते हैं, जिन्हें हर हाल में भोगना ही पड़ता है।

यदि हम चाहते हैं कि हमारे जीवन में खुशहाली आए, हमारे जीवन में सुख-शांति रहे, हमारे घर में सभी स्वस्थ रहें और परिजन शांति के साथ जीवन व्यतीत करें, तो सबसे पहले ध्यान देना होगा अपने विचारों पर, क्योंकि हमारे विचार ही भाग्य

और दुर्भाग्य का निर्माण करते हैं। सर्वप्रथम अपने विचारों को सही दिशा दें और हर पल आकलन करते रहें कि कहीं आपके मन में कुविचारों का प्रवाह तो नहीं चल पड़ा है? आपका मन चोरी, छल-कपट, ईर्ष्या-द्वेष की ओर तो प्रयाण नहीं कर रहा है? यदि ऐसा है, तो ऐसे विचारों पर हमें विराम लगाकर पापमय विचारों से मुक्त होना होगा, मन में सद्विचारों को प्रवाह देना होगा, इसके बाद ही आपको पूजा-पाठ, ध्यान-साधना का लाभ प्राप्त होगा। अतः अपने विचारों को पावन रखें, अपने बच्चों को सुबह उठाएं और स्नानादि के बाद अपने साथ पूजा-पाठ के क्रम में बैठाएं। बच्चों को अलग से संस्कारित करने की ज़रूरत नहीं है, बल्कि स्वयं के क्रिया-कलापों को धार्मिक बना लें, नशे-मांसाहार से मुक्त सात्विक व कर्ममय जीवन जिएं। आपके बच्चे भी उसी पथ पर चल पड़ेंगे, क्योंकि बच्चे जो देखते हैं, उसी अनुरूप अपने आपको ढाल लेते हैं।''

धर्मसम्राट् युग चेतना पुरुष सद्गुरुदेव परमहंस
योगीराज श्री शक्तिपुत्र जी महाराज

134वाँ

त्रिदिवसीय

शक्ति चेतना जनजागरण

त्रिशक्ति साधना शिविर

शारदीय नवरात्र पर्व

19, 20, 21 अक्टूबर 2026

पूर्ण आध्यात्मिक एवं भौतिक सुख-शान्ति प्रदाता, 108 महाशक्तियज्ञों की श्रृंखला के कर्ता, महान तपस्वी, सिद्धाश्रम सिरमौर, प्रकृतिसत्ता माता भगवती आदिशक्ति जगत् जननी जगदम्बा से एकाकार, अंतरंग योगों के महान ज्ञाता, भगवती मानव कल्याण संगठन एवं पंचज्योति शक्तितीर्थ सिद्धाश्रम धाम के संस्थापक-संचालक धर्मसम्राट् युग चेतना पुरुष सद्गुरुदेव परमहंस योगीराज श्री शक्तिपुत्र जी महाराज के द्वारा अधर्म के नाश व सत्यधर्म की स्थापना तथा माता भगवती श्री दुर्गा जी की दिव्य चेतना को जन-जन में जाग्रत् करने व नशे-मांसाहार से मुक्त चरित्रवान्, चेतनावान्, परोपकारी एवं पुरुषार्थी समाज के निर्माण के लक्ष्य को लेकर विश्वअध्यात्म की धर्मधुरी के रूप में स्थापित अलौकिक साधनास्थली, तपोभूमि पंचज्योति शक्तितीर्थ सिद्धाश्रम में प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी शारदीय नवरात्र पर्व के पावन अवसर पर त्रिदिवसीय शक्ति चेतना जनजागरण त्रिशक्ति साधना शिविर का विशाल आयोजन किया जा रहा है।

यह त्रिशक्ति साधना शिविर आपके जीवन के लिए एक सुनहरा अवसर है। यदि आप जीवन के किसी भी पक्ष से निराश हो चुके हैं, संघर्षों का सामना कर रहे हैं या योग-ध्यान-साधना, कुण्डलिनी जागरण और अध्यात्म के क्षेत्र में बढ़ने की इच्छा रखते हैं, तो इस अवसर का लाभ अवश्य उठाएं। साथ ही, यदि आप या आपके परिवार का कोई भी सदस्य किसी भी प्रकार के नशे से ग्रसित हैं और अनेक प्रयासों के बाद भी नशे से मुक्त नहीं हो पा रहे हैं, तो इस शिविर में सम्मिलित होकर नशे से मुक्त होने का सौभाग्यशाली सुनहरा अवसर प्राप्त कर सकते हैं।

इस आयोजन में समस्त जाति-धर्म-सम्प्रदाय की धर्मप्रेमी जनता, माता भगवती श्री दुर्गा जी के भक्तों एवं परम पूज्य सद्गुरुदेव श्री शक्तिपुत्र जी महाराज के सभी शिष्यों, भगवती मानव कल्याण संगठन के समस्त कार्यकर्ताओं के साथ ही आपको भी आमंत्रित किया जाता है कि इस कार्यक्रम में सपरिवार एवं अपने इष्टमित्रों सहित पहुंचकर आध्यात्मिक लाभ प्राप्त करें और अपने जीवन को सफल बनायें।

नित्यप्रति का कार्यक्रम - दिनांक 19 अक्टूबर दिन सोमवार से 21 अक्टूबर दिन बुधवार

प्रातः 4:30 से 9 बजे तक	-	मंत्र जाप, आरती, चालीसा पाठ, गुरु आशीर्वाद प्राप्त करने एवं योग-ध्यान-साधना का क्रम।
अपराह्न 1 से 2 बजे तक	-	माँ-गुरुवर के भजन एवं जयकारे।
अपराह्न 2 से 4 बजे तक	-	सद्गुरुदेव श्री शक्तिपुत्र जी महाराज के चेतनात्मक प्रवचन।
सायं 4 से 6 बजे तक	-	दिव्य आरती, प्रणाम एवं प्रसाद वितरण का क्रम।

गुरुदीक्षा

दिनांक 21 अक्टूबर दिन बुधवार को प्रातः 07 बजे तक प्रवचन पण्डाल पर उपस्थित होने वाले इच्छुक भक्तों को परम पूज्य सद्गुरुदेव श्री शक्तिपुत्र जी महाराज के द्वारा गुरुदीक्षा प्रदान की जाएगी। विलम्ब से उपस्थित होने वाले भक्त गुरुदीक्षा से वंचित रह जाएंगे।

कार्यक्रम का सीधा प्रसारण यूट्यूब चैनल BMKS पर नित्यप्रति अपराह्न 01:30 बजे से सायं 06:00 बजे तक एवं संतवाणी टीवी चैनल पर अपराह्न 02:00 बजे से सायं 05:30 बजे तक किया जाएगा।

आयोजक एवं कार्यक्रम स्थल

भगवती मानव कल्याण संगठन
पंचज्योति शक्तितीर्थ सिद्धाश्रम

पोस्ट- मऊ, तहसील-ब्यौहारी, ज़िला-शहडोल (म.प्र.)-484774

सम्पर्क सूत्र- 9981657948, 9630717447, 9811218125, 9111347734, 9171337768, 9893885656, 9981005001

Websites: www.bmks.in, www.siddhashramdhaam.com YouTube: BMKS, Siddhashram Dham

आवास एवं भोजन की निःशुल्क व्यवस्था

समस्त शिविरार्थियों के लिए आश्रमस्थल पर ही आवासीय पण्डाल में ठहरने एवं भोजन की व्यवस्था निःशुल्क रहेगी।

विशेषः आश्रमस्थल पर किसी भी प्रकार का नशा करना पूर्णतया वर्जित है। अतः पूर्णतया नशामुक्त रहकर ही शिविर का लाभ लें।

प्रेरणाप्रद कथानक

टूटा भीम का अहंकार

द्वापर काल में एक बार द्रौपदी की इच्छा पूरी करने के लिए भीम 'सहस्त्रदल कमल' लेने हेतु गंधमादन पर्वत की ओर जा रहे थे। रास्ते में एक संकरा मार्ग था, जहाँ एक बूढ़ा और कमज़ोर सा दिख रहा वानर अपनी पूंछ फैलाकर लेटा हुआ था। भीम ने अहंकारपूर्ण शब्दों में कहा, 'ऐ वानर, रास्ते से हट जा, मुझे आगे जाना है।' वानर ने आँखें खोलीं और विनम्रतापूर्वक कहा, 'हे वीर पुरुष, मैं वृद्ध और बीमार हूँ, मुझमें हिलने की भी शक्ति नहीं है। यदि तुम्हें जाना है, तो मुझे लांघकर चले जाओ।'

भीम ने क्रोधपूर्ण स्वर में कहा, 'मैं एक क्षत्रिय हूँ और मेरा धर्म यह अनुमति नहीं देता कि मैं किसी को लांघकर जाऊं, तुम अपनी पूंछ हटाओ।' वानर ने कहा, 'तुम शक्तिशाली प्रतीत होते हो, यदि मेरी पूंछ को हटा सकते हो, तो एक ओर हटा दो और अपना रास्ता बना लो।' भीम मन ही मन हंसने लगे और विचार किया कि इस दुर्बल वानर की पूंछ हटाना कौन सी बड़ी बात है? उन्होंने अपने एक हाथ से पूंछ उठाने की कोशिश की, पर वह हिली तक नहीं। फिर भीम ने अपने दोनों हाथों का उपयोग किया और पूरी ताक़त लगा दी, लेकिन सफलता नहीं मिली।

भीम के माथे से पसीना बहने लगा और उनका अहंकार चूर-चूर होगया। उन्हें यह समझ में आ गया था कि यह कोई साधारण वानर नहीं है। भीम ने हाथ जोड़कर क्षमा मांगी और पूछा, 'हे महात्मन, आप कौन हैं? कृपया अपना परिचय दें।' तब हनुमान जी अपने वास्तविक रूप में प्रकट हुए और बोले, 'हे भीम, तुम्हें अपनी शक्ति को लेकर जो अहंकार होगया था, उसे नष्ट करने के लिए ही मैंने यह रूप धारण किया था। स्मरण रखना कि शक्ति का उपयोग दूसरों की सेवा के लिए होता है, अहंकार के लिए नहीं।'

अध्यात्म गंगा

गीता ज्ञान

श्रीमद्भगवद्गीता

अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्राज्ञावादांश्च भाषसे।
गतासूनगतासूंश्च नानुशोचन्ति पण्डिताः।।

अर्थात- तू न शोक करने वाले मनुष्यों के लिए शोक करता है और पण्डितों के-से वचनों को कहता है; परन्तु जिनके प्राण चले गए हैं, उनके लिए और जिनके प्राण नहीं गए हैं, उनके लिए भी पण्डितजन शोक नहीं करते।

आशय- महाभारत युद्ध के दौरान परिवारजनों के मोह में फँसे अर्जुन को कर्तव्यबोध कराते हुए, श्रीकृष्ण उन्हे संबंधों की क्षणभंगुरता एवं शोकरहित जीवन जीने का ज्ञान देते हैं। असल में शोक से जीवन की समस्त स्थिरता भंग हो जाती है और व्यक्ति कर्तव्य पथ से विमुख हो जाता है। शोक से बचने के लिए आवश्यक है कि मोह से बचा जाय। तभी भगवान् कहते हैं कि मोहरहित जीवन जियो। हमारे सभी कुटुंबी व अन्य समस्त संबंधी एक न एक दिन मृत्यु को प्राप्त होंगे, सभी नाशवान् हैं। अतः मोह बंधन से परे होकर अपने धर्म व कर्तव्य का पालन करना ही सर्वश्रेष्ठ है।

न त्वेवाहं जातु नासं न त्वं नेमे जनाधिपाः।
न चैव न भविष्यामः सर्वे वयमतः परम।।

अर्थात- न तो ऐसा ही है कि मैं किसी काल में नहीं था, तुम नहीं थे अथवा ये राजा लोग नहीं थे और न ऐसा ही है कि इससे आगे हम सब नहीं रहेंगे।

आशय- परम पूज्य सद्गुरुदेव श्री शक्तिपुत्र जी महाराज द्वारा 'आत्मा की अमरता व कर्म की प्रधानता' रूपी महामंत्र की पुष्टि का गीता के इस उपदेश से अच्छा उदाहरण और कहीं नहीं मिल सकता। अर्जुन द्वारा शस्त्र उठाने से संकोच करने पर भगवान् ने समझाया कि तुम्हारा कर्म आवश्यक है, तुम युद्ध करो। क्योंकि यह जीवन-मरण सदैव रहा है और रहेगा। आत्मा अमर है और वह युद्ध के रक्तपात से मरने वाली नहीं।

देहिनोऽस्मिन्यथा देहे कौमारं यौवनं जरा।
तथा देहान्तरप्राप्तिर्धीरस्तत्र न मुह्यति॥

अर्थात- जैसे इस शरीर में जीवात्मा को कुमार, युवा और वृद्धावस्था प्राप्त होती है, वैसे ही अन्य शरीर की प्राप्ति भी होती है, इस विषय में धीर पुरुष मोहित नहीं होते।

भावार्थ- आशय यह है कि शरीर की मृत्यु से हमारा अस्तित्व समाप्त नहीं होता! मृत्यु के पश्चात् कर्मानुसार नवीन शरीर लेकर नवजीवन मिलता है। अतः धर्म और कर्तव्य पालन सदैव श्रेष्ठ है।

क्रमशः ...

योगजगत

क्रमशः ...

पेट के बल लेटकर किये जाने वाले आसन

8. हस्तपादप्रसार विपरीत धनुरासन

विधि- पेट के बल लेटकर दोनों हाथों को आगे व पैरों को पीछे सीधा रखें। फिर दायें हाथ को मोड़कर पीछे लाएं और बायें पैर को उठाकर उसके पंजे को पकड़कर खीचें। छाती, गर्दन व सिर को उठाते हुए, बायें हाथ को सीधा तानें व दायें पैर को सीधा रखें। इसी क्रम को दूसरे हाथ और पैर से भी कर लें।

लाभ- यह आसन धनुरासन के समान लाभ प्रदान करता है तथा सम्पूर्ण शरीर को स्वास्थ्य लाभ प्रदान करता है।

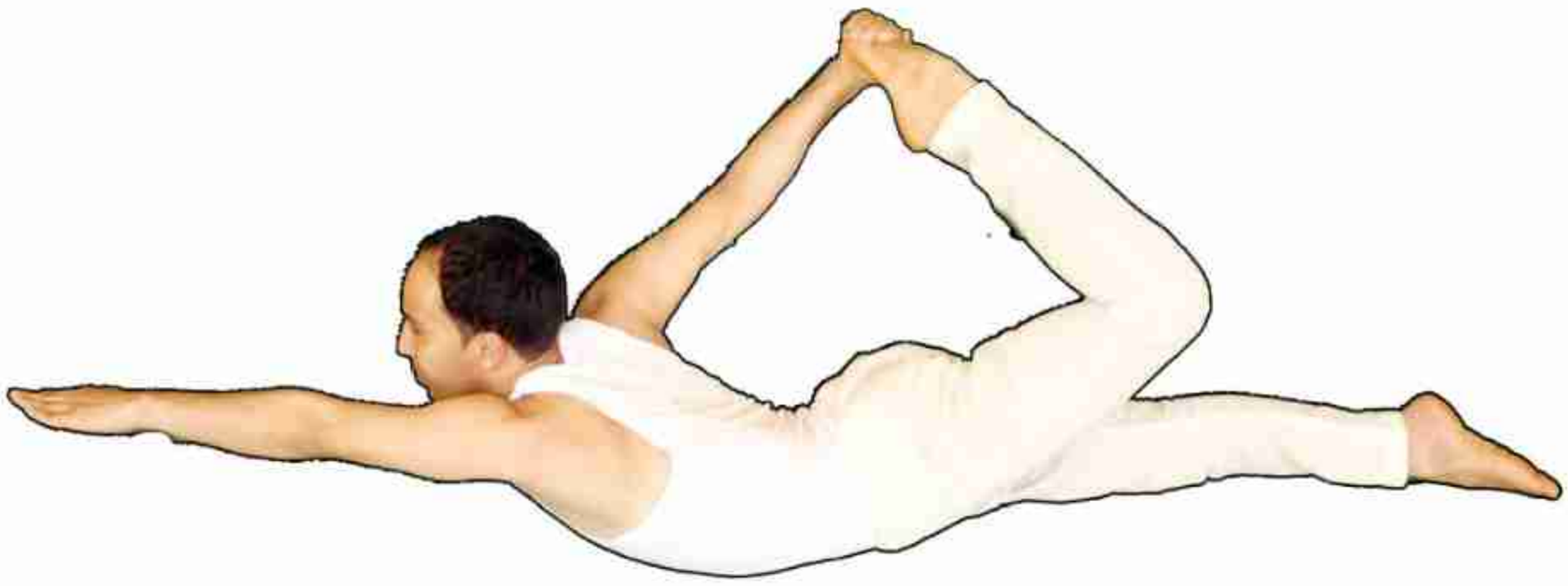

9. झूलासन

विधि- पेट के बल लेटकर दोनों हाथों को आगे की ओर फैलायें व पैरों को पीछे सीधा रखें। अब हाथ, छाती, गर्दन व सिर को ऊपर की ओर उठायें। पैर ज़मीन पर ही रहें। फिर छाती, गर्दन, सिर व हाथों को जमीन पर लायें और पीछे से पैरों को ऊपर की ओर उठायें। इसी क्रम को थोड़ा शीघ्रता से इस प्रकार करें कि शरीर का भार पेट और नाभि पर रहे और शरीर झूले के समान ऊपर नीचे हो।

लाभ- इससे सम्पूर्ण शरीर में चेतना का संचार होता है व स्फूर्ति आती है। यह नाभि के लिए लाभदायक है।

10. विश्रामासन

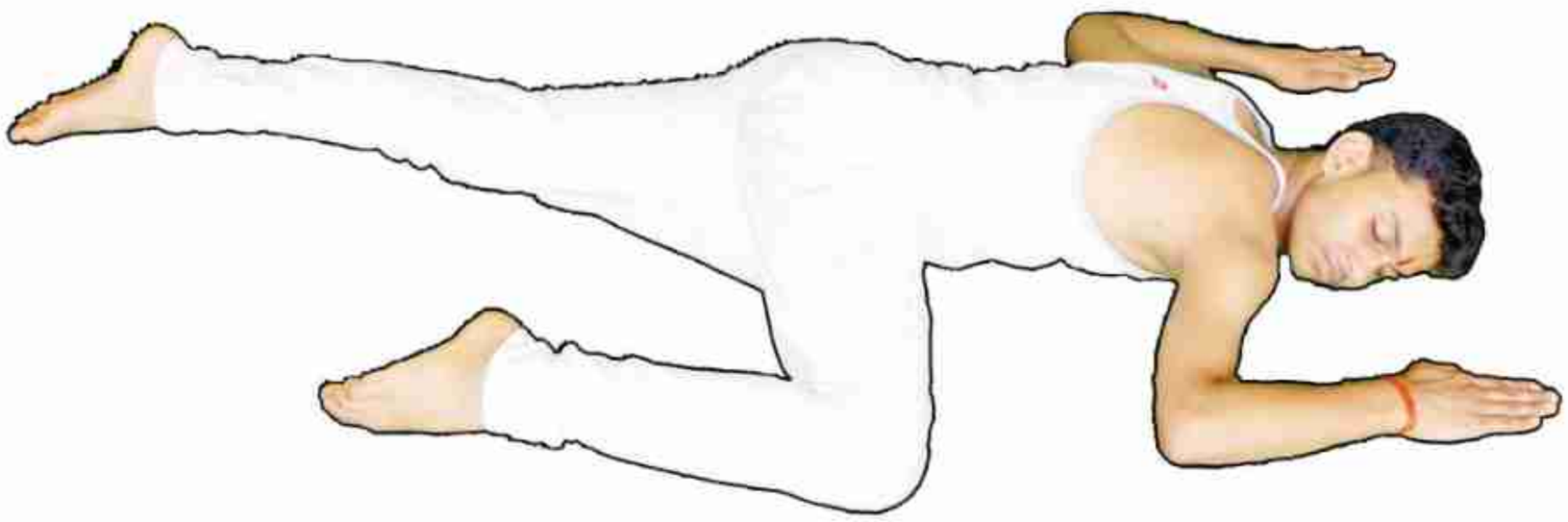

विधि- पेट के बल लेटकर दोनों हाथों को कोहनियों से मोड़कर हथेलियों को जमीन पर इस प्रकार रखें कि हथेलियां सिर के समानान्तर आजायें और दाएं पैर को घुटने से मोड़कर बगल में कमर की तरफ लायें और गर्दन मोड़कर मुख दायीं तरफ ज़मीन पर टिका दें। अब पूरे शरीर को ढीला छोड़ दें। कुछ देर रुककर इसी क्रम को बायें पैर से करें व सिर को बायीं तरफ घुमा कर करें।

लाभ- इससे शरीर की थकावट दूर होती है और मन को शांति मिलती है।

---

11. मयूरासन

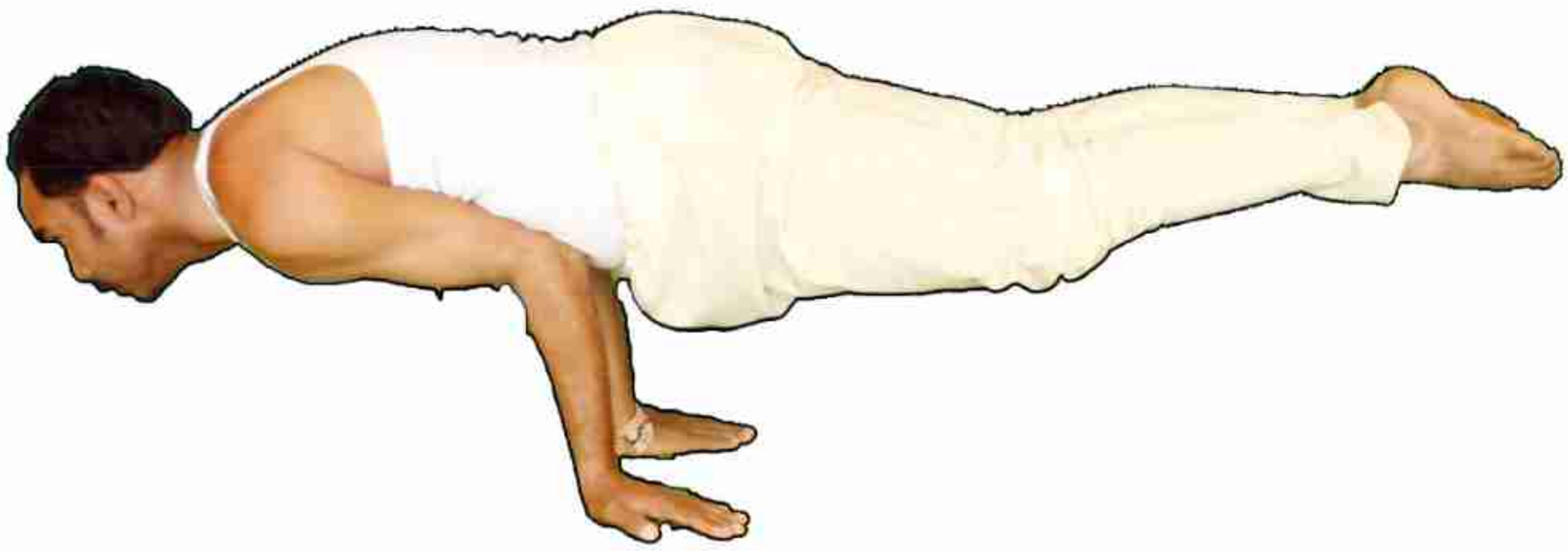

विधि- घुटनों के बल बैठकर दोनों हाथों को कोहनियों से मोड़कर हथेलियों को ज़मीन पर टिका दें। अब कोहनियों को नाभि पर लगाते हुए, पैरों को ज़मीन से उठाकर पीछे की ओर सीधा करें और पूरे शरीर का भार कोहनियों में डालते हुए इस तरह सन्तुलन बनाएं कि सिर, कमर और पैर एक सीध में रहें। कुछ देर रुककर वापस आजायें।

लाभ- इससे भुजायें बलिष्ठ होती हैं, शरीर का संतुलन बनता है, मन की एकाग्रता आती है और चेहरे पर तेज प्रकट होता है।

नशाविरोधी जनान्दोलन

संगठन एवं पार्टी के कार्यकर्ता लगातार ज़ब्त करवा रहे हैं अवैध शराब

भगवती मानव कल्याण संगठन एवं भारतीय शक्ति चेतना पार्टी के कार्यकर्ताओं के द्वारा संयुक्त रूप से अवैध शराब की खेपें पकड़कर सम्बंधित थाने की पुलिस के सुपुर्द कर आरोपियों के विरुद्ध क़ानूनी कार्यवाही करवाई जा रही है।

इसी क्रम में, दिनांक 30 मार्च को रात्रि 09:30 बजे दमोह ज़िले के बटियागढ़ थानान्तर्गत सरिया चौराहा, बटियागढ़ में दो पेटी शराब पकड़ी गई। दो आरोपी मोटरसाइकिल से शराब लेजा रहे थे, जो मौक़े पर पुलिस के पहुंचने से पूर्व फरार होगए।

दिनांक 31 मार्च को अपराह्न 02:30 बजे दमोह ज़िले के बटियागढ़ थाने की फुटेरा चौकी अन्तर्गत डमना पुलिया, बरखेड़ा रोड, फुटेरा गाँव के पास तीन पेटी शराब पकड़ी गई। दो आरोपी एचएफ डीलक्स मोटरसाइकिल से शराब लेजा रहे थे, जो मौक़े से मोटरसाइकिल सहित फरार होगए।

दिनांक 31 मार्च को सायं 07:00 बजे दमोह ज़िले के बटियागढ़ थाने की फुटेरा चौकी अन्तर्गत फुटेरा गांव के पास, तीन पेटी देशी मसाला शराब पकड़ी गई। दो आरोपी बिना नम्बर की मोटरसाइकिल से शराब लेजा रहे थे।

दिनांक 31 मार्च को ही रात्रि 11:30 बजे दमोह ज़िले के मगरोन थानान्तर्गत ग्राम-मंगोला में दो पेटी देशी मसाला शराब पकड़ी गई। आरोपी घनश्याम

दमोह ज़िले के बटियागढ़ थानान्तर्गत सरिया चौराहा बटियागढ़ में पकड़ी गई शराब

दमोह ज़िले के बटियागढ़ थानान्तर्गत डमना पुलिया, बरखेड़ा रोड फुटेरा गांव के पास पकड़ी गई शराब

दमोह ज़िले के बटियागढ़ थानान्तर्गत फुटेरा गांव के पास पकड़ी गई शराब

लोधी, निवासी ग्राम-खेजरा टीव्हीएस मोटरसाइकिल से शराब लेजा रहा था।

दिनांक 02 अप्रैल को रात्रि 09:30 बजे दमोह ज़िले के थाना मगरोन अंतर्गत ऊजरा भेषासुर बब्बा के पास दो पेटी शराब पकड़ी गई। आरोपी बारेलाल रैकवार, निवासी ग्राम-करिया पीपर, शराब ले जा रहा था।

दिनांक 13 अप्रैल को सायं 06:00 बजे दमोह ज़िले के तेजगढ़ थाने की इमलिया चौकी अन्तर्गत ग्राम-सलैया हारट में तीन पेटी शराब पकड़ी गई। दो आरोपी बिना नम्बर की एचएफ डीलक्स मोटरसाइकिल से शराब लेजा रहे थे।

दिनांक 20 अप्रैल को रात्रि लगभग 01:50 बजे दमोह ज़िले के हिण्डोरिया थाने की बांदकपुर चौकी अंतर्गत बांदकपुर में चार पेटी देशी मसाला शराब पकड़ी गई। आरोपी राजेद्र तिवारी, डीलक्स मोटरसाइकिल से शराब लेजा रहा था।

दिनांक 20 अप्रैल को ही रात्रि लगभग 03:30 बजे दमोह ज़िले के हिण्डोरिया थाने की बांदकपुर चौकी अंतर्गत ग्राम आनू, रेलवे लाइन पुलिया, कालू फाटक पर एक पेटी देशी मसाला शराब पकड़ी गई। आरोपी अरविंद सिंह ठाकुर स्प्लेंडर मोटरसाइकिल क्रमांक-एमपी 34, जेडई/ 2612 से शराब लेजा रहा था।

दमोह ज़िले के मगरोन थानान्तर्गत मंगोला गांव में पकड़ी गई शराब

दमोह ज़िले के मगरोन थानान्तर्गत ऊजरा भैषासुर बब्बा के पास पकड़ी गई शराब

दमोह ज़िले के तेजगढ़ थानान्तर्गत सलैया हारट गांव के पास पकड़ी गई शराब

दमोह ज़िले के हिण्डोरिया थानान्तर्गत रेल्वे पुलिया के पास आनू गांव में पकड़ी गई शराब

दमोह ज़िले के हिण्डोरिया थानान्तर्गत बांदकपुर में पकड़ी गई शराब

क्रमशः ...

नशाविरोधी जनान्दोलन के अन्तर्गत पकड़ी गई अवैध शराब की सूची

1837	30.03.2026	सरिया चौराहा, बटियागढ़ थाना-बटियागढ़, ज़िला-दमोह (म.प्र.)	02 पेटी देशी मसाला अवैध शराब, बिना नम्बर की मोटरसाइकिल, आरोपी फ़रार
1838	31.03.2026	बरखेड़ा रोड, चौकी-फुटेरा, थाना-बटियागढ़, ज़िला-दमोह (म.प्र.)	03 पेटी देशी मसाला अवैध शराब, बिना नम्बर की एचएफ डीलक्स मोटरसाइकिल के साथ में दो आरोपी फ़रार
1839	31.03.2026	फुटेरा गांव के पास, चौकी-फुटेरा, थाना-बटियागढ़, ज़िला-दमोह (म.प्र.)	03 पेटी देशी मसाला अवैध शराब, बिना नम्बर की मोटरसाइकिल, दो आरोपी
1840	31.03.2026	मंगोला और करिया पीपर गांव के बीच थाना-मगरोन, ज़िला-दमोह (म.प्र.)	02 पेटी देशी मसाला अवैध शराब, बिना नम्बर टीव्हीएस मोटरसाइकिल, एक आरोपी
1841	02.04.2026	ऊजरा भेषासुर बब्बा के पास थाना-मगरोन, ज़िला-दमोह (म.प्र.)	02 पेटी देशी मसाला अवैध शराब, एक आरोपी
1842	13.04.2026	सलैया हारट गांव के पास, थाना-तेजगढ़, ज़िला-दमोह (म.प्र.)	03 पेटी देशी मसाला अवैध शराब, बिना नम्बर की एचएफ डीलक्स मोटरसाइकिल, दो आरोपी
1843	20.04.2026	ग्राम-बांदकपुर, चौकी-बांदकपुर थाना-हिण्डोरिया, ज़िला-दमोह (म.प्र.)	04 पेटी देशी मसाला अवैध शराब, बिना नम्बर की एचएफ डीलक्स मोटरसाइकिल, एक आरोपी
1844	20.04.2026	ग्राम-आनू, चौकी-बांदकपुर थाना-हिण्डोरिया, ज़िला-दमोह (म.प्र.)	01 पेटी देशी मसाला अवैध शराब, स्प्लेंडर मोटरसाइकिल क्रमांक-एमपी 34, जेडई/ 2612, एक आरोपी

कार्यकर्ता बैठक - वर्ष 2026

भगवती मानव कल्याण संगठन
पंचज्योति शक्तितीर्थ सिद्धाश्रम

दिनांक 30 मई से 21 जून 2026

चरण	दिनांक/दिन	प्रदेश
प्रथम चरण	30-31 मई शनिवार-रविवार	महाराष्ट्र एवं कर्नाटक
द्वितीय चरण	13-14 जून शनिवार-रविवार	गुजरात, राजस्थान, तेलंगाना एवं आंध्रप्रदेश
तृतीय चरण	20-21 जून शनिवार-रविवार	दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश एवं उत्तराखण्ड

नोट- विशेष ध्यान दें कि सभी कार्यकर्ता संगठन की निर्धारित वेशभूषा में पहुंचें तथा शक्तिदण्डध्वज व शंख अपने साथ लायें। साथ ही, अपनी शाखा की बैठक की निर्धारित तिथि की पूर्व संध्या तक पंचज्योति शक्तितीर्थ सिद्धाश्रम पहुंचना सुनिश्चित करें।

उपरोक्त बैठकों के क्रम में गुरुदीक्षाप्राप्त समस्त शिष्यों की उपस्थिति अनिवार्य है।

गुरुकृपा

प्राणों की हुई रक्षा

मैं कार्तिक साहू, उम्र 25 वर्ष, ग्राम-कसडोल, ज़िला-बलौदाबाज़ार, छत्तीसगढ़ का रहने वाला हूँ। मैंने सन् 2010 में शारदीय नवरात्र पर पंचज्योति शक्तितीर्थ सिद्धाश्रम में आयोजित शक्ति चेतना जनजागरण शिविर में सद्गुरुदेव श्री शक्तिपुत्र जी महाराज से दीक्षा प्राप्त की थी और तभी से भगवती मानव कल्याण संगठन की विचारधारा पर चलकर नशे-मांसाहार से मुक्त चरित्रवान् जीवन जीता हुआ जीवन की यात्रा तय कर रहा हूँ।

दिनांक 18 जनवरी 2026 की सुबह 06 बजे की घटना है। मैं अन्य छह लोगों के साथ अपने चारपहिया वाहन स्कार्पियो क्रमांक-सीजी 04,क्यूआर/7690 के द्वारा गृहग्राम कसडोल से रायपुर जा रहा था कि ग्राम अमेरा के समीप विपरीत दिशा से आ रहे तेज रफ्तार हाइवा ट्रक ने मेरे वाहन को टक्कर मार दी, जिससे स्कार्पियो के सामने का हिस्सा क्षतिग्रस्त होगया, लेकिन इतनी बड़ी दुर्घटना में हमें केवल आंशिक चोटें ही आईं। घटना के बाद गाड़ी में आग भी लग गई थी, जिसमें समय रहते काबू पा लिया गया।

हमारा जीवन सुरक्षित बचना, यह परम पूज्य गुरुवरश्री की कृपा से ही सम्भव हो सका, अन्यथा प्रत्यक्षदर्शियों का कहना था कि इतनी बड़ी दुर्घटना में तो कार में सवार सभी लोगों का सुरक्षित बचना सम्भव नहीं था। सभी लोगों का सुरिक्षत बच जाना 'माँ' की कृपा व परम पूज्य गुरुवर श्री शक्तिपुत्र जी महाराज के आशीर्वाद का ही परिणाम है।

कार्तिक साहू
बलौदाबाज़ार, छत्तीसगढ़

गुरुकृपा

हमें मिला जीवनदान

मैं नागेश पाल पुत्र श्री ईश्वर पाल, ज़िला-खैरागढ़, छत्तीसगढ़ का निवासी हूँ। मैंने फ़रवरी 2020 में पंचज्योति शक्तितीर्थ सिद्धाश्रम पर आयोजित शक्ति चेतना जनजागरण शिविर में सद्गुरुदेव श्री शक्तिपुत्र जी महाराज से दीक्षा प्राप्त की थी और तभी से भगवती मानव कल्याण संगठन की विचारधारा पर चलते हुए कर्मपथ पर अग्रसर हूँ।

दिनांक 25 जनवरी 2026 की घटना है। मैं निजी कार्यवश एक कार से परिवारसहित कवर्धा गया था और जब वहाँ से वापस लौट रहा था, तो एक मोड़ पर कार अनियन्त्रित होकर पुलिया से टकराकर पलट गई। जैसे ही यह दुर्घटना हुई, मेरे मुख से यही आवाज़ निकली कि 'हे गुरुवर, हमारी रक्षा करना' और गुरुकृपा से हमें जीवनदान मिला।

मैं भगवती मानव कल्याण संगठन की विचारधारा के अनुरूप अपना कुछ समय जनकल्याणकारी कार्यों में देने के साथ ही नित्यप्रति सुबह-शाम 'माँ'-गुरुवर की साधना-आराधना करता हूँ और नित्यप्रति शक्तिजल का पान करता हूँ, जिससे नकारात्मक शक्तियाँ पास में न फटकने पाएं। मैं आप लोगों से भी चाहता हूँ कि आत्मकल्याण के साथ जनकल्याण को अपना लक्ष्य बनाएं तथा साधना-आराधना में अपना कुछ समय अवश्य दें, मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'माँ'-गुरुवर की कृपा से आप हमेशा अविभूत रहेंगे।

नागेश पाल
खैरागढ़, छत्तीसगढ़

आत्मज्ञान

भय व समस्याओं से भागें नहीं, सामना करें !

एक बार स्वामी नारायण दास चित्रकूट के एक मंदिर से लौट रहे थे कि रास्ते में अचानक वहाँ मौजूद बंदरों के एक झुंड ने उन्हें घेर लिया और डराने लगे। स्वामी जी ने सोचा कि भागकर खुद को बचाना ही बेहतर है, इसलिए वे तेजी से दौड़ने लगे, लेकिन वे जितना तेज भागते, बंदर उनके पीछे उतना ही शोर करते हुए और तेजी से झपटते। स्वामी जी काफी घबरा गए और उन्हें लगा कि अब बचना मुश्किल है। तभी वहाँ से गुज़र रहे एक वृद्ध संन्यासी ने उन्हें जोर से चिल्लाकर कहा 'रुको! भागो मत और उन बंदरों का सामना करो।'

संन्यासी की आवाज़ में ऐसा प्रभाव था कि स्वामी जी तुरंत रुक गए। वे पीछे मुड़े और पूरे साहस के साथ बंदरों की आँखों में आँखें डालकर खड़े होगए। यह देखकर बंदर सहम गए और जो बंदर उन पर हमला करने वाले थे, वे एक-एक करके पीछे हट गए और अंत में भाग गए।

इस कथानक से हमें यह सीख मिलती है कि डर से भागना डर को बढ़ावा देना है। भय और समस्याएँ बिल्कुल उन बंदरों की तरह होती हैं। आप जितना उनसे दूर भागेंगे, वे उतना ही आपका पीछा करेंगी और जिस क्षण आप रुककर अपनी समस्याओं का धैर्यपूर्वक सामना करने का निश्चय करते हैं, भय और समस्याएँ अपना प्रभाव खोने लगती हैं। ध्यान रखिए कि भय व समस्याओं से जितना भागोगे, वे तुम्हारा उतना ही पीछा करेंगी।

ॐ शक्तिपुत्राय गुरुभ्यो नमः माँ ॐ जगदम्बिके दुर्गायै नमः

पंचज्योति शक्तितीर्थ सिद्धाश्रम ट्रस्ट के
आश्रम निर्माण, समाजसेवा एवं जनजागरण अभियान में सहभागिता हेतु अपनी मासिक आय की पांच प्रतिशत राशि का समर्पण निम्नवत् बैंक खाते में करें :

नाम – पंचज्योति शक्तितीर्थ सिद्धाश्रम ट्रस्ट
बैंक – भारतीय स्टेट बैंक, शाखा – ब्यौहारी (06075)
अकाउण्ट नम्बर – 35030046927, आई.एफ.एस. कोड – SBIN0006075

विशेष समर्पण राशि खाते में जमा करने के परचात् निम्नांकित मोबाइल नम्बरों में से किसी एक पर समर्पण राशि का पूरा विवरण (समर्पणकर्ता का नाम, समर्पणकर्ता के पिता या माता का नाम, सम्पूर्ण पता, पैन नम्बर या आधार नम्बर, जमा की गई राशि व तिथि) अवश्य सूचित करें। **मोबाइल नम्बर – 9171337768, 9981005001, 7693853203**

नोट – यह सुविधा मात्र समस्त भारतवासियों के लिए ही है। विदेश से जमा की गई राशि स्वीकार नहीं की जाएगी।

आयुर्वेद
लेखमाला क्र.- 221

ग्रीष्म ऋतु में हीट स्ट्रोकः धूप की मार को प्रकृति से हराएं

गर्मी की शुरुआत होते ही धूप ऐसी तपने लगती है कि बाहर निकलना मुश्किल हो जाता है। अचानक सिर घूमने लगता है, जी मिचलाने लगता है, शरीर गरम हो जाता है, पसीना रुक जाता है और फिर चक्कर आकर गिर पड़ते हैं। यह कोई साधारण लू नहीं - यह हीट स्ट्रोक है, जो जान भी ले सकता है। हजारों लोग हर साल इसकी चपेट में आते हैं, खासकर बच्चे और बुजुर्ग। लेकिन घबराएं नहीं। प्रकृति ने हमें ऐसे सरल उपाय दिए हैं, जो मिनटों में राहत देते हैं।

प्राकृतिक चिकित्सा और आयुर्वेद के अनुसार

आयुर्वेद में ग्रीष्म को पित्त के प्रकोप का मौसम कहा गया है। तेज धूप से शरीर का तापमान बढ़ता है, पित्त और वात असंतुलित हो जाते हैं। इसे "सूर्यावर्त" कहते हैं – जैसे सूर्य ने शरीर पर हमला कर दिया हो। प्राकृतिक चिकित्सा भी यही मानती है: गर्मी में शरीर डिहाइड्रेट हो जाता है, इलेक्ट्रोलाइट्स कम हो जाते हैं और खून गाढ़ा पड़ जाता है।

मेरी राय में, अस्पताल की दवाएं या इंजेक्शन ज़रूरी हो सकते हैं, लेकिन शुरुआती राहत घरेलू उपाय ही देते हैं, क्योंकि वे शरीर को अंदर-बाहर से ठंडक देते हैं, बिना किसी साइड इफेक्ट के। नारियल पानी और चंदन जैसे उपाय तुरंत हाइड्रेशन देते हैं, पित्त शांत करते हैं और तापमान कम करते हैं।

लक्षण- हीट स्ट्रोक के लक्षण अचानक आते हैं और डराते हैं। सिर भारी होना, चक्कर आना, जी मिचलाना। त्वचा गरम और सूखी हो जाना, पसीना रुक जाना। दिल की धड़कन तेज, सांस फूलना। गंभीर होने पर बेहोशी, उल्टी या दौरा भी पड़ सकता है। बच्चे रोने लगते हैं, बुजुर्ग कमजोर पड़ जाते हैं। ये सब इसलिए होते हैं, क्योंकि शरीर का तापमान खतरनाक स्तर पर पहुंच जाता है।

तीन चमत्कारी प्राकृतिक उपाय- ग्रीष्म में तेज गर्मी, लू और हीट स्ट्रोक से बचाव बहुत ज़रूरी है। प्रकृति ने हमें तीन बहुत सरल उपाय दिए हैं, जो घर पर ही कर सकते हैं। ये शरीर को ठंडक देते हैं, पित्त शांत करते हैं और जान बचाते हैं।

1. नारियल पानी - इसे लक्षण दिखते ही पीना शुरू कर दें। यह प्राकृतिक ORS की तरह काम करता है।

कैसे इस्तेमाल करें?

हरा नारियल का ताजा पानी लें। लक्षण दिखते ही 200-300 मिली. धीरे-धीरे पिलाएँ। उसके बाद हर आधे घंटे में 100-100 मिली. देते रहें।बच्चों को कम मात्रा में बार-बार पिलाएँ।

फायदा: यह शरीर में पानी और इलेक्ट्रोलाइट्स की कमी पूरी करता है। शरीर को अंदर से ठंडक देता है और तापमान तेजी से कम करता है। यह सबसे तेज राहत देने वाला उपाय है। कई बार तो बेहोशी जैसी हालत से होश में ला देता है।

2. चंदन का लेप - यह जलन और सिरदर्द के लिए बहुत असरदार है।

कैसे बनाएँ और लगाएँ?

शुद्ध चंदन पाउडर लें।इसे गुलाब जल या ठंडे दूध में मिलाकर गाढ़ा लेप बनाएँ।माथे, गर्दन, छाती, हथेलियों और तलवों पर लगाएँ। हर 30 मिनट में नया लेप लगाते रहें।

फायदा: चंदन पित्त को शांत करता है। जलन, गर्मी और सिरदर्द-चक्कर बहुत तेजी से कम करता है। यह शरीर का "नेचुरल कूलर" है – बिना एसी के ठंडक देता है!

3. ठंडी सेंक और स्पंज - यह बाहर से शरीर को ठंडा करने का सबसे तेज तरीका है।

कैसे करें?

व्यक्ति को छाया में लिटाएँ।ठंडे पानी की पट्टियाँ सिर, गर्दन और काँख पर रखें। पूरे शरीर को ठंडे पानी से हल्के हाथ से पोंछें।

फायदा: यह बाहर से शरीर का तापमान तेजी से कम करता है। खून ठंडा होता है और लू के लक्षण जल्दी नियंत्रण में आ जाते हैं। गर्मी के मौसम में इन्हें हमेशा याद रखें।

ग्रीष्म ऋतु में रोगानुसार आहार की संक्षिप्त जानकारी

ग्रीष्म में आहार ही सबसे बड़ी सुरक्षा है। पित्त बढ़ाने वाली चीजें छोड़ें, ठंडक देने वाली अपनाएं। तीन दिन सख्ती करें, फिर शरीर खुद संभल जाएगा।

क्या खाएँ व पिएं?

- नारियल पानी, मुनक्का पानी, अनार-मौसंबी जूस।
- छाछ, खीरा, तरबूज, संतरा।
- मूंग खिचड़ी घी-पुदीना के साथ।
- सत्तू या बेल शर्बत। गुलकंद ठंडे दूध में।

क्यों खाएं? ये पित्त शांत करते हैं, एनर्जी देते हैं। ऐसे भोजन से गर्मी में भी मन खुश रहता है।

क्या न खाएँ या कम खाएँ?

- चाय-कॉफी, मिर्च-मसाले, तला-भुना।
- बाहर का जूस, कोल्ड ड्रिंक।
- दही, पनीर, नमकीन।

क्यों छोड़ें? ये पित्त भड़काते हैं, डिहाइड्रेशन बढ़ाते हैं। गर्मी में मसालेदार खाओगे, तो धूप खुद अंदर से लगेगी!

तुरंत राहत देने वाले उपाय

• लक्षण दिखते ही छाया में लिटाएं, कपड़े ढीले करें।नारियल पानी पिलाएं। चंदन लेप और ठंडी पट्टियां लगाएं। पैर ऊंचे रखें। पंखा चलाएं, लेकिन सीधी हवा नहीं।

ये उपाय इसलिए तेज काम करते हैं, क्योंकि वे शरीर को तुरंत ठंडक देते हैं।

सावधानियाँ -

- बगैर काम के सुबह 10 से शाम 4 बजे तक धूप में न निकलें।
- छाता, टोपी, सूती कपड़े पहनें।
- हर घंटे पानी पिएं।
- प्याज साथ रखें।
- बच्चों-बुजुर्गों पर खास ध्यान दें।
- राहत न मिले, तो अस्पताल जाएं।

बृजपाल सिंह चौहान (गुरुसेवक)
ND (नेचुरोपैथी), वैद्यविशारद, आयुर्वेदरत्न
www.bschauhan09.blogspot.com

माह मई-जून 2026

महत्त्वपूर्ण व्रत एवं पर्व

दिनांक	दिन	व्रत/पर्व
01 मई	शुक्रवार	स्नानदान व्रत पूर्णिमा
10 मई	रविवार	कृष्णपक्ष अष्टमी (शक्ति साधना दिवस)
16 मई	शनिवार	स्ना. दा. श्रा. अमावस्या
24 मई	रविवार	शुक्लपक्ष अष्टमी (गोसेवा समर्पण दिवस)
25 मई	सोमवार	नवतपा प्रारम्भ
30 मई	शनिवार	व्रत पूर्णिमा
31 मई	रविवार	स्नानदान पूर्णिमा
03 जून	बुधवार	नवतपा समाप्त
08 जून	सोमवार	कृष्णपक्ष अष्टमी (शक्ति साधना दिवस)
14 जून	रविवार	श्राद्ध अमावस्या
15 जून	सोमवार	स्ना. दा. अमावस्या, सोमवती अमावस्या
21 जून	रविवार	अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस
22 जून	सोमवार	शुक्लपक्ष अष्टमी (गोसेवा समर्पण दिवस)
29 जून	सोमवार	स्ना. दा. व्र. पूर्णिमा

सिद्धाश्रम पत्रिका - सदस्यता विवरण

आत्मीय बन्धु,

यदि आप त्रिशक्ति प्रोडक्ट्स प्राइवेट लिमिटेड के द्वारा प्रकाशित पूर्ण अध्यात्मिक एवं समसामयिक मासिक 'सिद्धाश्रम पत्रिका' के सदस्य बनना चाहते हैं, तो सम्बन्धित विवरण प्रस्तुत है -

1. पत्रिका की सदस्यता का वार्षिक सदस्यता शुल्क रुपये 360 है।
   (उपर्युक्त सदस्यता राशि जमा करने पर पत्रिकाएँ साधारण डाक द्वारा प्राप्त की जा सकेंगी, कोरियर या रजिस्टर्ड डाक द्वारा मंगाने पर अतिरिक्त शुल्क देय होगा।)
2. सदस्यता शुल्क निम्नांकित बैंक अकाउण्ट में जमा करा सकते हैं-
   नाम- त्रिशक्ति प्रोडक्ट्स प्राइवेट लिमिटेड अकाउण्ट नम्बर- 34406155612
   आई.एफ.एस.सी. कोड- SBIN0006075 बैंक- स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, ब्रांच- ब्यौहारी
   (बैंक खाते में राशि डिपॉजिट करने के पश्चात् निम्न मोबाइल नम्बरों में से किसी एक पर अपना नाम, पूरा पता, पिनकोड, सम्पर्क सूत्र सहित बैंक डिपॉजिट की डिटेल्स अवश्य नोट कराएं- 7693853203, 7241173130)
   (विशेष ध्यान दें कि इस बैंक खाते में केवल सिद्धाश्रम पत्रिका की सदस्यता राशि ही जमा करें।)
3. सदस्य अपना नाम और पूरा पता कृपया स्पष्ट अक्षरों में पिन कोड एवं सम्पर्क सूत्र के साथ अवश्य भेजें।
4. त्रिशक्ति प्रोडक्ट्स प्राइवेट लिमिटेड किसी भी डाक के विलम्ब, परिवहन क्षति या किसी भी लिपिकीय त्रुटि के लिए जिम्मेदार नहीं होगा।

भावगीत

महिमा सिद्धाश्रम धाम की

जहाँ प्रवाहित है भक्ति की अविरल धारा,
महिमा ऐसी सिद्धाश्रम धाम की।
जहाँ बहे भक्ति की गंगा-कावेरी,
गुरुवर जी की है ऐसी धर्मधुरी।।
महिमा ऐसी सिद्धाश्रम धाम की...

तीस वर्षों से है ज्योति प्रज्वलित,
भक्ति, शक्ति का दिव्य प्रकाश यहाँ।
अविराम चल रहा श्री दुर्गाचालीसा,
रुकता नहीं भक्तों का प्रवाह यहाँ।।
महिमा ऐसी सिद्धाश्रम धाम की...

गुरुवरश्री से आशीर्वाद पाकर,
मिट जाते हैं दुःख-संताप सभी।
नशामुक्त हुए करोड़ों जीवन,
न मिले इतनी परम शांति कहीं।।
महिमा ऐसी सिद्धाश्रम धाम की...

गुरुवरश्री के अमृतमयी चिंतन से,
हम सबका ही कल्याण हुआ।
माँ-गुरुवर के चरणों से जुड़कर,
मानवता एवं धर्म का सम्मान हुआ।।
महिमा ऐसी सिद्धाश्रम धाम की...

धर्म-धैर्य-पुरुषार्थ और तप-साधना का,
केन्द्र एक ऐसा सिद्धाश्रम धाम है।
यहाँ का कण-कण पावन है,
जहाँ गूंज रहा 'माँ' का नाम है।।
महिमा ऐसी सिद्धाश्रम धाम की...

धर्म, राष्ट्र, मानवता की रक्षा से ही,
युग परिवर्तन का आधार बनेगा।
मानवीय कर्तव्यों के पालन से ही,
सुख-शांति और संतोष का संसार सजेगा।।
महिमा ऐसी सिद्धाश्रम धाम की...

अलोपी शुक्ल, सिद्धाश्रम (म.प्र.)